श्रीराधारस

दास तौ तिहारे, जो उदास तौ तिहारे,
दूर पास तौ तिहारे, आम ख़ास तौ तिहारे हैं ।
दीन तौ तिहारे, मति हीन तौ तिहारे,
जो नवीन तौ तिहारे, प्राचीन तौ तिहारे हैं ।
कूर तौ तिहारे, गुण पूर तौ तिहारे,
राँचे नूर तौ तिहारे, सांचे सूर तौ तिहारे हैं ।
भायक तिहारे, यश गायक तिहारे,
हो सहायक हमारे हम पायक तिहारे हैं ॥

श्री राधा

प्रथम संस्करण – १,००० प्रतियाँ

प्रकाशित २८ फरवरी २०२३

फाल्गुन, शुक्लपक्ष, रंगीली होली, नवमी, २०७९ विक्रमी सम्वत्

प्राप्ति-स्थान

मान मन्दिर, बरसाना

फोन – ९९२७३३८६६६

एवं

श्रीराधा खंडेलवाल ग्रन्थालय

अठखम्बा बाजार, वृन्दावन

फोन – ९९९७९७७५५१

श्री मानमन्दिर सेवा संस्थान

गह्वरवन, बरसाना, मथुरा (उ.प्र.)

फोन – ९९२७३३८६६६

http://www.maanmandir.org

info@maanmandir.org

गुण–गरिमागार, करुणा–पारावार, युगललब्ध–साकार इन विभूति विशेष गुरुप्रवर पूज्य बाबाश्री के विलक्षण विभा–वैभव के वर्णन का आद्यन्त कहाँ से हो यह विचार कर मन्द मति की गति विथकित हो जाती है।

विधि हरि हर कवि कोविद बानी ।
कहत साधु महिमा सकुचानी ॥
सो मो सन कहि जात न कैसे ।
साक बनिक मनि गुन गन जैसे ॥

(श्रीरामचरितमानस, बालकाण्ड –३क)

पुनरपि

जो सुख होत गोपालहि गाये ।
सो सुख होत न जप तप कीन्हे, कोटिक तीरथ न्हाये ।

(सूर–विनयपत्रिका)

अथवा

रस सागर गोविन्द नाम है रसना जो तू गाये ।
तो जड़ जीव जनम की तेरी बिगड़ी हू बन जाये ॥
जनम–जनम की जाये मलिनता उज्ज्वलता आ जाये ॥

(बाबाश्री द्वारा रचित 'बरसाना' से संग्रहीत)

कथनाशय इस पवित्र चरित्र के लेखन से निज कर व गिरा पवित्र करने का स्वसुख व जनहित का ही प्रयास है।

अध्येतागण अवगत हों इस बात से कि यह 'लेख' मात्र सांकेतिक परिचय ही दे पाएगा अशेष श्रद्धास्पद (बाबाश्री) के विषय में। सर्वगुणसमन्वित इन दिव्य–विभूति का प्रकर्ष–आर्ष जीवन–चरित्र कहीं लेखन–कथन का विषय है?

"करनी करुणासिन्धु की मुख कहत न आवै"

(सूर–विनयपत्रिका)

मलिन अन्तस् में सिद्ध सन्तों के वास्तविक वृत्त को यथार्थ रूप से समझने की क्षमता ही कहाँ, फिर लेखन की बात तो अतीव दूर है तथापि इन लोक–लोकान्तरोत्तर विभूति के चरितामृत की श्रवणाभिलाषा ने असंख्यों के मन को निकेतन कर लिया, अतएव सार्वभौम महत् वृत्त को शब्दबद्ध करने की धृष्टता की।

तीर्थराज प्रयाग को जिन्होंने जन्मभूमि बनने का सौभाग्य–दान दिया। माता–पिता के एकमात्र पुत्र होने से उनके विशेष वात्सल्यभाजन रहे। ईश्वरीय–योजना ही मूल हेतु रही आपके अवतरण में। दीर्घकाल तक अवतरित दिव्य दम्पति स्वनामधन्य श्री बलदेव प्रसाद शुक्ल ('शुक्ल भगवान्' जिन्हें लोग कहते थे) एवं श्रीमती हेमेश्वरी देवी को सन्तान–सुख अप्राप्य रहा, सन्तान–प्राप्ति की इच्छा से कोलकाता के समीप तारकेश्वर में जाकर आर्त पुकार की, परिणामतः सन् १९३० पौष मास की सप्तमी को रात्रि ९:२७ बजे कन्यारत्न श्री तारकेश्वरी (दीदी जी) का अवतरण हुआ, अनन्तर दम्पत्ति को पुत्र–कामना ने व्यथित किया। पुत्र–प्राप्ति की इच्छा से कठिन यात्रा कर रामेश्वर पहुँचे, वहाँ जलान्न त्याग कर शिवाराधन में तल्लीन हो गये, पुत्र कामेष्टि महायज्ञ किया। आशुतोष हैं रामेश्वर प्रभु, उस तीव्राराधन से प्रसन्न हो तृतीय रात्रि को माता जी को सर्वजगन्निवासावास होने का वर दिया। शिवाराधन से सन् १९३८ पौष मास कृष्ण पक्ष की सप्तमी तिथि को अभिजित मुहूर्त मध्याह्न १२ बजे अद्भुत बालक का ललाट देखते ही पिता (विश्व के प्रख्यात व प्रकाण्ड ज्योतिषाचार्य) ने कह दिया –

"यह बालक गृहस्थ ग्रहण न कर नैष्ठिक ब्रह्मचारी ही रहेगा, इसका प्रादुर्भाव जीव–जगत के निस्तार निमित्त ही हुआ है।"

वही हुआ, गुरु–शिष्य परिपाटी का निर्वाहन करते हुए शिक्षाध्ययन को तो गये किन्तु बहु अल्पकाल में अध्ययन समापन भी हो गया।

"अल्पकाल विद्या बहु पायी"

गुरुजनों को गुरु बनने का श्रेय ही देना था अपने अध्ययन से। सर्वक्षेत्र–कुशल इस प्रतिभा ने अपने गायन–वादन आदि ललित कलाओं से विस्मयान्वित कर दिया बड़े–बड़े संगीत–मार्तण्डों को। प्रयागराज को भी स्वल्पकाल ही यह सानिध्य सुलभ हो सका "तीर्थी कुर्वन्ति तीर्थानि" ऐसे अचिन्त्य शक्ति सम्पन्न असामान्य पुरुष का। अवतरणोद्देश्य की पूर्ति हेतु दो बार भागे जन्मभूमि छोड़कर ब्रजदेश की ओर किन्तु माँ की पकड़ अधिक मजबूत होने से सफल न हो सके। अब यह तृतीय प्रयास था, इन्द्रियातीत स्तर पर एक ऐसी प्रक्रिया सक्रिय हुई कि तृणतोड़नवत् एक झटके में सर्वत्याग कर पुनः गति अविराम हो गई ब्रज की ओर।

चित्रकूट के निर्जन अरण्यों में प्राण–परवाह का परित्याग कर परिभ्रमण किया; सूर्यवंशमणि प्रभु श्रीराम का यह वनवास–स्थल 'पूज्यपाद' का भी वनवास–स्थान रहा। "स रक्षिता रक्षति यो हि गर्भे" इस भावना से निर्भीक घूमे उन हिंसक जीवों के आतंक संभावित भयानक वनों में।

आराध्य के दर्शन को तृषान्वित नयन, उपास्य को पाने के लिए लालसान्वित हृदय अब बार–बार 'पाद–पद्मों' को श्रीधाम बरसाने के लिए ढकेलने लगा, बस पहुँच गए बरसाना। मार्ग में अन्तस् को झकझोर देने वाली अनेकानेक विलक्षण स्थितियों का सामना किया। मार्ग का असाधारण घटना संघटित वृत्त यद्यपि अत्यधिक रोचक, प्रेरक व पुष्कल है तथापि इस दिव्य जीवन की चर्चा स्वतन्त्र रूप से भिन्न ग्रन्थ के निर्माण में ही सम्भव है, अतः यहाँ तो संक्षिप्त चर्चा ही है। बरसाने में आकर तन–मन–नयन आध्यात्मिक मार्गदर्शक के अन्वेषण में तत्पर हो गए। श्रीजी ने सहयोग किया एवं निरन्तर राधारससुधा सिन्धु में अवस्थित, राधा के परिधान में सुरक्षित, गौरवर्णा की शुभ्रोज्वल कान्ति से आलोकित–अलङ्कृत युगल सौख्य में आलोडित, नाना पुराणनिगमागम के ज्ञाता, महावाणी जैसे निगूढ़ात्मक ग्रन्थ के

प्राकट्यकर्ता "अनन्त श्री सम्पन्न श्री श्री प्रियाशरण जी महाराज" से शिष्यत्व स्वीकार किया।

ब्रज में भामिनी का जन्म स्थान 'बरसाना', बरसाने में भामिनी की निज कर निर्मित 'गह्वर–वाटिका' "बीस कोस वृन्दाविपिन पुर वृषभानु उदार, तामें गहवर वाटिका जामें नित्य विहार" और उस गह्वरवन में भी महासदाशया मानिनी का मनभावन मान–स्थान 'श्रीमानमन्दिर' ही मानद (बाबाश्री) को मनोनुकूल लगा। 'मानगढ़' ब्रह्माचलपर्वत की चार शिखरों में से एक महान शिखर है। उस समय तो यह 'बीहड़ स्थान' दिन में भी अपनी विकरालता के कारण किसी को मन्दिर–प्राङ्गण में न आने देता। मन्दिर का आन्तरिक मूल–स्थान चोरों को चोरी का माल छिपाने के लिए था। चौराग्रगण्य की उपासना में इन विभूति को भला चोरों से क्या भय?

भय को भगाकर भावना की – "तस्कराणां पतये नमः" – चोरों के सरदार को प्रणाम है, पाप–पङ्क के चोर को भी एवं रकम–बैंक के चोर को भी। 'ब्रजवासी चोर भी पूज्य हैं हमारे' इस भावना से भावित हो द्रोहार्हणों (द्रोह के योग्य) को भी कभी द्रोह–दृष्टि से न देखा, अद्वेष्टा के जीवन्त स्वरूप जो ठहरे। फिर तो शनैः–शनैः विभूति की विद्यमत्ता ने स्थल को जाग्रत कर दिया, अध्यात्म की दिव्य सुवास से परिव्याप्त कर दिया।

जग–हित–निरत इस दिव्य जीवन ने असंख्यों को आत्मोन्नति के पथ पर आरूढ़ कर दिया एवं कर रहे हैं। श्रीमच्चैतन्यदेव के पश्चात् कलिमलदलनार्थ नामामृत की नदियाँ बहाने वाली एकमात्र विभूति के सतत् प्रयास से आज ३२ हजार से अधिक गाँवों में प्रभातफेरी के माध्यम से नाम निनादित हो रहा है। ब्रज के कृष्णलीला सम्बन्धित दिव्य वन, सरोवर, पर्वतों को सुरक्षित करने के साथ–साथ सहस्रों वृक्ष लगाकर सुसज्जित भी किया। अधिक पुरानी बात नहीं है, आपको स्मरण करा दें – सन् २००९ में "श्रीराधारानी ब्रजयात्रा" के दौरान ब्रजयात्रियों को साथ लेकर स्वयं ही बैठ गये आमरण अनशन पर इस संकल्प के साथ कि जब तक ब्रज–पर्वतों पर हो रहे खनन द्वारा आघात को सरकार

रोक नहीं देगी, मुख में जल भी नहीं जायेगा। समस्त ब्रजयात्री भी निष्ठापूर्वक अनशन लिए हुए हरिनाम–संकीर्तन करने लगे और उस समय जो उद्दाम गति से नृत्य–गान हुआ; नाम के प्रति इस अटूट आस्था का ही परिणाम था कि १२ घंटे बाद ही विजयपत्र आ गया। दिव्य विभूति के अपूर्व तेज से साम्राज्य–सत्ता भी नत हो गयी। गौवंश के रक्षार्थ गत १५ वर्ष पूर्व माताजी गौशाला का बीजारोपण किया था, देखते ही देखते आज उस वट बीज ने विशाल तरु का रूप ले लिया, जिसके आतपत्र (छाया) में आज ५५,००० से अधिक गायों का मातृवत् पालन हो रहा है। संग्रह–परिग्रह से सर्वथा परे रहने वाले इन महापुरुष की 'भगवन्नाम' ही एकमात्र सरस सम्पत्ति है।

परम विरक्त होते हुए भी बड़े–बड़े कार्य सम्पादित किये इन ब्रज–संस्कृति के एकमात्र संरक्षक, प्रवर्द्धक व उद्धारक ने। गत ७० वर्षों से ब्रज में क्षेत्रसन्यास (ब्रज के बाहर न जाने का प्रण) लिया एवं इस सुदृढ़ भावना से विराज रहे हैं। ब्रज, ब्रजेश व ब्रजवासी ही आपका सर्वस्व हैं। असंख्य जन आपके सान्निध्य–सौभाग्य से सुरभित हुये, आपके विषय में जिनके विशेष अनुभव हैं, विलक्षण अनुभूतियाँ हैं, विविध विचार हैं, विपुल भाव–साम्राज्य है, विशद अनुशीलन हैं; इस लोकोत्तर व्यक्तित्व ने विमुग्ध कर दिया है विवेकियों का हृदय। वस्तुतः कृष्णकृपालब्ध पुमान् को ही गम्य हो सकता है यह व्यक्तित्व। रसोदधि के जिस अतल–तल में आपका सहज प्रवेश है, यह अतिशयोक्ति नहीं कि रस–ज्ञाताओं का हृदय भी उस तल से अस्पृष्ट ही रह गया।

'आपकी आन्तरिक स्थिति क्या है' यह बाहर की सहजता, सरलता को देखते हुए सर्वथा अगम्य है। आपका अन्तरंग लीलानन्द, सुगुप्त भावोत्थान, युगल–मिलन का सौख्य इन गहन भाव–दशाओं का अनुमान आपके सृजित साहित्य के पठन से ही सम्भवहै। आपकी अनुपम कृतियाँ – श्री रसिया रसेश्वरी, स्वर वंशी के शब्द नूपुर के, ब्रजभावमालिका, भक्तद्वय चरित्र इत्यादि हृदयद्रावी भावों से भावित विलक्षण रचनाएँ हैं।

आपका त्रैकालिक सत्संग अनवरत चलता ही रहता है। साधक–साधु–सिद्ध सबके लिए सम्बल हैं आपके त्रैकालिक रसार्द्रवचन। दैन्य की सुरभि से सुवासित अद्भुत असमोर्ध्व रस का प्रोज्वल पुञ्ज है यह दिव्य रहनी, जो अनेकानेक पावन आध्यात्मास्वाद के लोभी मधुपों का आकर्षण केन्द्र बन गयी, सैकड़ों ने छोड़ दिए घर–द्वार और अद्यावधि शरणागत हैं; ऐसा महिमान्वित–सौरभान्वित वृत्त विस्मयान्वित कर देने वाला स्वाभाविक है।

रस–सिद्ध–सन्तों की परम्परा इस ब्रजभूमि पर कभी विच्छिन्न नहीं हो पाई। श्रीजी की यह 'गह्वर–वाटिका' जो कभी पुष्पविहीन नहीं होती, शीत हो या ग्रीष्म, पतझड़ हो या पावस, एक न एक पुष्प तो आराध्य के आराधन हेतु प्रस्फुटित ही रहता है। आज भी इस अजरामर, सुन्दरतम, शुचितम, महत्तम, पुष्प (बाबाश्री) का जग 'स्वस्तिवाचन' कर रहा है। आपके अपरिसीम उपकारों के लिए हमारा अनवरत वन्दन अनुक्षण प्रणति भी न्यून है।

क्रमांक पदानुक्रमणिका पृष्ठांक

१. दोहे ..... १ - १४
२. सवैये .....१५ - २९
३. कीरत महारानी, वृषभानु आदि गोप-गोपी.....३०
४. पायौ बड़े भागिनि सौं आसरौ किशोरीजू कौ.....३०
५. मेरे गुरु-माता-पिता लाड़ली किशोरी एक.....३०
६. सहज सुभाव परयौ नवल किशोरी जू कौ.....३१
७. स्याम तन स्याम मन स्याम ही हमारो धन.....३१
८. टेढ़े हूँ सुन्दर नैन, टेढ़े मुख कहे बैन.....३२
९. माथे पै मुकुट देख, चन्द्रिका की चटक देख.....३२
१०. टेढ़ी चन्द्रिका है याकी भ्रकुटी चितवन है टेढ़ी.....३२
११. छैल है छबीला महाबली महीपति है.....३३
१२. ब्रह्माहू के ध्यान में न आवै कभू एक छिन.....३३
१३. नैन-चकोर मुख-चंद हू पै बारि डारौं.....३४
१४. पहले ही जाय मिले गुन में स्रवन, फेरी.....३४
१५. कौन रूप, कौन रंग, कौन सोभा, कौन अङ्ग.....३४
१६. एक रज-रेणुका पै चिंतामणि वारि डारों.....३५
१७. गिरि कीजै गोधन मयूर नव कुञ्जन को.....३५
१८. वृन्दाबन धाम नीको ब्रज को विश्राम नीको.....३५

१९. वृन्दावन आनन्द बिहार चारु दम्पति के.....३६
२०. सहजै श्रीकृष्ण-कथा ठौर-ठौर होत तहाँ.....३६
२१. कीरत सुता के पग-पग पै प्रयाग जहाँ.....३७
२२. गायो न गोपाल मन लाय के निवारि लाज.....३७
२३. रुचिकर सँवारे नाहिं अङ्ग-अङ्ग स्यामा-स्याम.....३७
२४. कहा रसखान सुख-संपति सुमार महँ.....३८
२५. कंचन के मन्दिरन दीठि ठहरात नाहिं.....३८
२६. रूठे क्यों न राजा बाते कछु नहीं काजा.....३९
२७. गुनीजन सेवक अरु चाकर चतुर के हैं.....३९
२८. दास तौ तिहारे, जो उदास तौ तिहारे.....३९
२९. अन्तर उदेह दाह, आँखिन प्रवाह आँसू.....४०
३०. तेरी बाट हेरत हिराने औ पिराने पत.....४०
३१. काले परे कोस चलि चलि थक गये पाँय.....४१
३२. इन दुखियांन कूँ न चैन सपने हू मिल्यौ.....४१
३३. हम तौ तिहारे सब भांति सों कहावें सदा.....४१
३४. गुरुजन बरज रहे री बहु भांति मोहि.....४२
३५. मैंने रटना लगाई रे, राधा नाम की.....४२
३६. मन भूल मत जइयो राधा रानी के चरण.....४३
३७. वृषभानु की लली या सामलिया सौं नेहरा लगायकै.....४३
३८. अकेली मत जइये राधे यमुना तीर.....४४

३९.आज मेरे अँगना में आओ नन्दलाल.....४४
४०.आज ठाड़ौ री बिहारी यमुना तट पै.....४५
४१.झाँकी बनी विशाल बाँके गिरधर की.....४५
४२.झूला झूलत बिहारी वृन्दावन में.....४६
४३.वृन्दावन धाम अपार भजे जा राधे राधे.....४६
४४.प्रबल प्रेम के पाले पड़कर.....४७
४५.कजरारी तेरी आँखों में क्या.....४८
४६.क्या चाल शान अलबेली है.....४८
४७.गौर-स्याम बदनारबिंद पर.....४८
४८.देखो री यह नन्द का छोरा.....४८
४९.श्रीवृन्दाबन रज दरसावे सोई हितू हमारा है.....४९
५०.इतना तो करना स्वामी, जब प्राण तन से निकले.....४९
५१.ए री अलबेलो छैल छबीलो ब्रज में बाँकेबिहारी लाल....५१
५२.बाँकेबिहारी की बाँकी मरोर, चित लीन्हा है चोर.....५१
५३.तेरी भोरी सी सूरतिया मेरे मन गई है समाय.....५२
५४.नेकु नाचि दै बिहारी मेरे अँगना में आय.....५३
५५.नाना भाँति नचायौ, भक्तन नै मोय.....५३
५६.भक्तन कौ हितकारी मैं कृष्णमुरारी.....५५
५७.कैसौ माँगे दान दही कौ, रोकै मारग गिरधारी.....५६
५८.ग्वालिन करिदै मोल दही कौ, मोकूँ माखन तनिक.....५७

५९.अपनो गाँव रखो नन्दरानी ! हम कहीं और बसेंगी.....५८
६०.ऐसौ प्यारौ लगै न कोई जैसौ प्यारौ मोय बृज धाम.....५८
६१.पकरौ री ब्रजनारि कन्हैया होरी खेलन आयौ है.....५९
६२.धनि धनि राधिका के चरन.....६१
६३.चाँपत चरन मोहनलाल.....६१
६४.लगन नहीं छूटै एरी बीर.....६१
६५.बसौं मेरे नयनन में नन्दलाल.....६१
६६.लटकत आवत कुञ्ज भवन ते.....६२
६७.मुकुट पर वारी जाऊँ नागर नन्दा.....६२
६८.श्रीराधे दे डारो ना बाँसुरी मोरी.....६२
६९.श्रीकृष्ण गोविन्द हरे मुरारे, हे नाथ नारायण.....६२
७०.संकट हरैगी करेगी भली वृषभान की लली.....६४
७१.स्वामी कृष्णचन्द्र भगवान कुमर रानी यशुधा के हैं.....६५
७२.पाँड़े पूछ रह्यौ ग्वालन ते भैया कहाँ नंद कौ द्वार.....६७
७३.ऐसी कृपा करौ नंदलाल सदाँ हम बृज में करें.....७०
७४.निर्मल जमुना जल करवे को प्रभु ने नाथ्यो.....७०
७५.ब्राह्मण बनकें कृष्णमुरार पधारे बलि राजा के द्वार.....७४
७६.मेरौ निज वृन्दावन धाम लगे मोय जग ते प्यारौ.....७६
७७.जीवन मूर अनूठी मत जानै झूँठी, अमर अनूठी.....७८
७८.चंचल चपल चतुर चन्द्रावलि चालै चटक मटक.....७९

७९.कैसे आवों हो कन्हैया तेरी बृजनगरी.....८५
८०.कोई कहियो रे हरि आवन की.....८६
८१.मिलता जाज्यो हो गुरु ज्ञानी.....८६
८२.मुकुट पर वारी जाऊँ, नागर नंदा.....८६
८३.कृष्णपिया मोरी रंग दे चुनरिया.....८७
८४.मनमोहन प्रान प्यारे, टुक गली हमारी ओर.....८७
८५.जय राधे जय राधे राधे जय राधे जय श्री राधे.....८८
८६.मुनीन्द्रवृन्दवन्दिते त्रिलोकशोकहारिणि.....८९
८७.गृहे राधा वने राधा पृष्ठे राधा पुरःस्थिता.....९२
८८.अधरं मधुरं वदनं मधुरं नयनं मधुरं हसितं मधुरम्.....९३

श्रीराधारस

श्रीराधारसान्वित दोहे

मेरी भव बाधा हरौ, राधा नागरि सोय ।
जा तन की झाईं परत, स्याम हरित दुति होय ॥

श्रीराधा राधा रटौं, राधा ही कौ ध्यान ।
सदाँ लाल बलबीर उर, राधा नाम प्रधान ॥

बरसानो जानो नहीं, रट्यौ न राधा नाम ।
तौ तैनें जान्यौ कहा, ब्रज को तत्त्व महान ॥

राधा राधा जे कहत, चहुँ दिश तिनहिं हमेश ।
आयुध लै रक्षा करत, हरि हर वरुण सुरेश ॥

ब्रज की रज में लोटकर, यमुना जल कर पान ।
श्रीराधा राधा रटते, या तन सों निकलें प्रान ॥

मीठौ राधा नाम यश, जिन चाख्यौ एक बार ।
बहुरि न आये गर्भ में, उतर गये भव पार ॥

राधा मेरी सम्पदा, जिय की जीवन-मूल ।
राधा राधा रट सदा, रोम-रोम अनुकूल ॥

कबिरा धारा अगम की, सद्गुरु दई बताय ।
उलट ताहि पढ़िए सदा, स्वामी संग लगाय ॥

अहो किशोरी स्वामिनी, गोरी परम दयाल ।
तनिक कृपा की कोर लखि, कीजै मोहि निहाल ॥

काल डरै, जमराज डरै, तिहुँ लोक डरै, न करै कछु बाधा ।
रच्छक चक्र फिरै ता ऊपर, जो नर भूलि उचारै राधा ॥

राधा राधा रटत ही, सब बाधा मिट जाय ।
कोटि जनम की आपदा, राधा नाम ते जाय ॥

राधा राधा जे कहैं, ते न परैं भव-फन्द ।
जासु कन्ध पै कमल कर, धरे रहत ब्रजचन्द ॥

राधा राधा नाम कूँ, सपने हू जो लेय ।
ताकौं मोहन साँवरौ, रीझि अपन कों देय ॥

राधा राधा कहत हैं, जे नर आठौं याम ।
ते भवसिन्धु उलँघि कें, बसत सदा ब्रजधाम ॥

राधा श्रीराधा रटूँ, निसिदिन आठौं याम ।
जा उर श्रीराधा बसैं, सोइ हमारौ धाम ॥

सब द्वारन कों छाँड़ि कें, आयौ तेरे द्वार ।
अहो भानु की लाड़िली, मेरी ओर निहार ॥

अहो राधिके स्वामिनी, गोरी परम दयाल ।
सदा बसौ मेरे हिये, करिकें कृपा कृपाल ॥

राधे ! मेरी लाड़िली, मेरी ओर तू देख ।
मैं तोहि राखों नैन में, काजर की सी रेख ॥

कुँवरि किसोरी नाम सों, उपज्यौ दृढ़ विश्वास ।
करुणानिधि मृदुचित्त अति, ताते बढ़ी जिय आस ॥

स्यामा पद दृढ़ गह सखी, मिलिहैं निश्चय स्याम ।
ना मानै दृग देखि लै, स्यामा पद बिच स्याम ॥

श्रीराधा सर्वेश्वरी, रसिकेश्वर घनस्याम ।
करहुँ निरन्तर वास मैं, श्रीवृन्दावन धाम ॥

गोरी मन मोरी अहो, श्रीराधे सुखरास ।
चरन कमल वंदन करौं, पुजवौ जनकी आस ॥

श्री राधे राधे रटौं, राधे कौ उर ध्यान ।
मम कुल देवी देवता, राधारमण सुजान ॥

श्रीराधा राधा रटौं, त्याग जगत की आस ।
ब्रज वीथिन बिचरत रहौं, करि वृन्दावन वास ॥

श्रीवृषभानुकुमारि जू, विनय करौं सुनि कान ।
देहु निरन्तर आपने, चरनकमल कौ ध्यान ॥

हृद सरोवर प्रेम जल, तुम पद हद अरविन्द ।
मन मिलिन्द चाहत प्रिये, सदा-सदा मकरन्द ॥

जयति-जयति श्रीराधिका, चरण जुगल करि नेम ।
जाकी छटा प्रकास तें, पावत पामर प्रेम ॥

तजि तीरथ हरि राधिका, तन दुति करि अनुरागु ।
जिहि व्रज-केलि-निकुँज-मग, पग-पग होतु प्रयागु ॥

श्रीकृष्णप्रेमान्वित दोहे

मोर मुकुट कटि काछनी, कर मुरली उर माल ।
यह बनिक मो मन बसौ, सदा विहारी लाल ॥

कर लकुटी मुरली गहें, घूँघर वारे केस ।
यह बानिक मो हिय बसौ, स्याम मनोहर वेस ॥

आओ प्यारे मोहना, पलक झाँपि तोहि लेउँ ।
ना मैं देखूँ और कौं, ना तोहि देखन देऊँ ॥

मोहन मूरति स्याम की, मो मन रही समाय ।
ज्यों मेंहदी के पात में, लाली लखी न जाय ॥

मेरे प्यारे मोहना, वंशी नेकु बजाय ।
तेरी वंशी मन हर्‌यौ, घर अँगना न सुहाय ॥

लतन तरे ठाड़ौ कबहुँ, कबहूँ जमुना तीर ।
नारायन नैनन बसी, मूरति स्याम सरीर ॥

कजरारी अँखियान में, बस्यौ रहत दिन-रात ।
प्रीतम प्यारौ री सखी, तातें साँवल गात ॥

कबिरा काजर रेख हू, अब तौ दई न जाय ।
नैननि प्रीतम रमि रह्यौ, दूजौ कहाँ समाय ॥

या अनुरागी चित्त की, गति समुझै नहिं कोय ।
ज्यों-ज्यों बूढ़ै स्याम रंग, त्यौं-त्यौं उज्वल होय ॥

जाके मन में बस रही, मोहन की मुसक्यान ।
नारायन ताके हिये, और न लागत ग्यान ॥

कहि न जाय मुख सों कछू, स्याम प्रेम की बात ।
नभ - जल - थलचर अचर सब, स्यामहि स्याम लखात ॥

ब्रह्म नहीं माया नहीं, नहीं जीव नहिं काल ।
अपनी हू सुधि ना रही, रह्यौ एक नंदलाल ॥

नारायन जाके हृदय, सुन्दर स्याम समाय ।
डार पात फल फूल में, ताकों वही लखाय ॥

स्वर्ग मोच्छ चाहै नहीं, चाहै नन्दकिशोर ।
सुघढ़ सलौनौ साँवरौ, मुरलीधर मन चोर ॥

मनमोहन मन मोहना, मनमोहन मन माँहि ।
या मोहन ते सोहना, तीन लोक में नाँहि ॥

मोरमुकुट की लटक पर, अटक रहे दृग मोर ।
कान्ह कुँवर जमुना तटें, नटवर नन्द किसोर ॥

मोर मुकुट की निरखि छवि, लाजत मदन करोर ।
चन्दवदन सुख सदन पै, भावुक नैन चकोर ॥

दोऊ हाथ उठाइ कै, कहत पुकारि-पुकारि ।
जो चाहौ अपुनौ भलौ, तौ भजि लेहु मुरारि ॥

मोरौ मुख सब ओर सों, तोरौ भव के जाल ।
छोरौ सब साधन सुनौ, भजौ एक नंदलाल ॥

भरति नेह नव नीर नित, बरसत सुरस अथोर ।
जयति अपूरव धन कोऊ, लखि नाचत मनमोर ॥

श्रीप्रेम-रस

तन पुलकित रोमांच करि, नैननि नीर बहाव ।
प्रेम मगन उन्मत्त ह्वै, राधा राधा गाव ॥

प्रेम वनिज कीन्हो हुतौ, नेह नफा जिय जाँनि ।
अब प्यारे जिय की परी, प्रान पूँजि में हाँनि ॥

पिय-पिय रटि पियरी भई, पिय री मिले न आनि ।
लाल-मिलन की लालसा, लखि तन तजत न प्रानि ॥

जेहि लहि फिरि कछु लहन की, आस न चित में होय ।
जयति जगत पावन करन, प्रेम वरन यह दोय ॥

प्रथम सीस अरपन करै, पाछै करै प्रवेस ।
ऐसे प्रेमी सुजन कौ, है प्रवेस यहि देस ॥

ग्यानी ढिंग गंभीर हरि, सत-चित-ब्रह्मानन्द ।
प्रेम संग खेलत सदा, चंचल प्रेमानन्द ॥

श्री राधा

जब मैं था तब हरि नहीं, अब हरि हैं मैं नाँहि ।
प्रेम गली अति साँकरी, तामें दो न समाँहि ॥

ऐरे कठिन अहीर के, नेंक पीर पहिचानि ।
तब मुख दर्शन कारनै, छाँड़ि दई कुल काँनि ॥

प्रेम सरोवर प्रेम की, भरी रहै दिन रैन ।
जँह जँह प्यारी पग धरैं, लाल धरे दोऊ नैन ॥

इष्ट मिले अरु मन मिले, मिले भजन रसरीति ।
मिलिये ताहि निसंक ह्वै, कीजै तिन सों प्रीति ॥

बहुत मिले सो संग नहिं, न्यारी न्यारी भाँति ।
युगल प्रेम रस मगन जे, तेई अपनी पाँति ॥

बिस्वभरन पोषन करन, कल्प तरोवर नाम ।
सो प्रभु दधि चोरी करत, प्रेम बिवस भगवान ॥

जँह प्रियतम तिहि देस की, प्यारी लागत पौन ।
प्रेम छटा जानै बिना, यह सुख समुझै कौन ॥

कबिरा हाँसन दूरि कर, रोने सों कर प्रीति ।
बिन रोये नहिं पाइये, प्रेम पियारौ मीत ॥

हँस-हँस कन्त न पाइया, जिन पाया तिन रोय ।
हँसि खेलें पिय मिलै तौ, कौन दुहागिनि होय ॥

बँधे पेंच के पेंच पर, पेंच-पेंच में पेंच ।
फिर निकसै सरकै न मन, ऐसे पेंच कुपेंच ॥

गौर स्याम तन मन रँगे, प्रेम स्वाद रस सार ।
निकसत नहिं तिहि ऐन ते, अटके सरस बिहार ॥

ऐसे रस में दिन मगन, नहिं जानत निसि भोर ।
वृन्दावन में प्रेम की, नदी बहै चहुँ ओर ॥

नैना बड़े गरीब हैं, रहत पलक की ओट ।
बरजे ते मानें नहीं, करत लाख में चोट ॥

सीस काटि भूई धरै, ता पै राखै पाँव ।
इश्क चमन के बीच में, ऐसा हो तो आव ॥

मुक्ति कहै गोपाल सों, मेरी मुक्ति बताय ।
ब्रजरज उड़ि मस्तक लगै, मुक्ति मुक्त है जाय ॥

कुँवरि चरन अंकित धरनि, देखत जेहि-जेहि ठौर ।
प्रियाचरन रज जानिकै, लुठत रसिक सिरमौर ॥

धन वृन्दावन धाम है, धन वृन्दावन नाम ।
धन वृन्दावन रसिक जे, सुमिरें स्यामा स्याम ॥

वृन्दावन के वृक्ष कौ, मरम न जानै कोय ।
डार डार अरु पात पै, राधे राधे होय ॥

वृन्दावन में बास करि, साग पात नित खात ।
तिनके भागन कों निरख, ब्रह्मादिक ललचात ॥

न्यारौ है सब लोक तें, वृन्दावन निज गेह ।
खेलत लाड़िली लाल जहँ, भीजे सरस सनेह ॥

श्रीपति श्रीमुख कमल सों, नारद कों समुझाइ ।
वृन्दावन रस सबन तें, राख्यौ दूरि दुराइ ॥

शिव विधि उद्धव सबन की, यह आशा है चित्त ।
गुल्म लता ह्वै सिर धरें, श्रीवृन्दावन रज नित्त ॥

वृन्दा विपिन प्रभाव सुनि, अपुनौ ही गुन देत ।
जैसे बालक मलिन कों, मात गोद भरि लेत ॥

और देस के बसत ही, घटत भजन की बात ।
वृन्दावन में स्वारथहिं, उलटि भजन ह्वै जात ॥

बसि कै वृन्दाविपिन में, ऐसी मन में राख ।
प्रान तजौं वन ना तजौं, कहौ बात कोउ लाख ॥

चलत फिरत सुनियत यहै, (श्री) राधावल्लभलाल ।
ऐसे वृन्दाविपिन में, बसत रहौ सब काल ॥

खंड खंड ह्वै जाइ तन, अङ्ग अङ्ग सत टूक ।
वृन्दावन नहिं छाँड़िये, छँड़िवौ है बड़ि चूक ॥

तजि वृन्दा विपिन कों, और तीर्थ जे जात ।
छाँड़ि विमल चिन्तामणी, कौड़ी कों ललचात ॥

जीरन पट अति दीन लट, हिये सरस अनुराग ।
विबस सघन बन में फिरै, गावत जुगल सुहाग ॥

न्यारो चौदह लोक तें, वृन्दावन निज भौंन ।
तहाँ न कबहू लगत है, महा प्रलय की पौन ॥

कदम कुंज ह्वैहौं कबै, श्रीवृन्दावन माँहि ।
ललित किसोरी लाड़िले, विहरेंगे तेहिं छाँहि ॥

कब हौं सेवाकुंज में, ह्वैहों स्याम तमाल ।
लतिका कर गहि विरमि हैं, ललित लड़ैतीलाल ॥

सुमन वाटिका विपिन में, ह्वै हौं कब हौं फूल ।
कोमल कर दोउ भाँवते, धरि है बीन दुकूल ॥

मिलि है कब अङ्ग छार ह्वै, श्रीवन वीथिन धूर ।
परि है पद पंकज जुगल, मेरी जीवन मूर ॥

कब गह्वर की गलिन में, फिरि हों होय चकोर ।
जुगलचंद मुख निरखि हों, नागरि नवलकिसोर ॥

कब कालिन्दी कूल की, ह्वै हों तरुवर डार ।
ललित किशोरी लाड़िली, झूलें झूला डार ॥

जोग ध्यान आवै नहीं, जग्य भाग ना लेयँ ।
ताकों ब्रज की गोपिका, हँसि-हँसि माखन देयँ ॥

वृन्दावन में परि रहौ, देखि बिहारी रूप ।
तासु बराबरि को करै, सब भूपन कौ भूप ॥

सबसों हित निष्काम मति, वृन्दावन विश्राम ।
राधावल्लभ लाल कौ, हृदय ध्यान मुख नाम ॥

बृन्दावन में जो कबहूँ, भजन कछु नहिं होय ।
रज तौ उड़ि लागै तनहिं, पीवै जमुना तोय ॥

जै-जै श्रीवृन्दाविपिन, जै-जै श्री सुख रास ।
जै-जै रसिकन प्रान-धन, मम उर करहु निवास ॥

तीन लोक ते सरस है, श्रीवृन्दावन सुखकन्द ।
जहँ निसिदिन बिहरत रहै, श्रीराधा गोविन्द ॥

तजौं गेह सुख देह के, और जगत के फन्द ।
जुगल चरन सों प्रीत कर, बस वृन्दावनचन्द ॥

महारानी श्रीराधिका, अष्ट सखिन के झुंड ।
डगर बुहारत साँवरौ, जै-जै राधा कुण्ड ॥

वृन्दावन बानिक बन्यौ, भ्रमर करत गुञ्जार ।
दुलहनि प्यारी राधिका, दूलह नन्द कुमार ॥

ब्रज चौरासी कोस में, चार गाम निज धाम ।
वृन्दावन अरु मधुपुरी, बरसानौ नन्दगाँम ॥

ब्रज समुद्र मथुरा कमल, वृन्दावन मकरन्द ।
ब्रज-बनिता सब पुष्प हैं, मधुकर गोकुलचन्द ॥

नारायन ब्रजभूमि कों, सुरपति नावै माथ ।
जहाँ आय गोपी भये, श्रीगोपीश्वर नाथ ॥

दर दिवार दरपन भये, जित देखों तित तोहि ।
काँकर पाथर ठीकरी, भये आरसी मोहि ॥

लोक चतुर्दश मुकुटमणि, सदा सर्व सुखकन्द ।
श्रीवृषभानु कुमारि कौ, श्रीवृन्दावन चन्द ॥

चलौ सखी तहँ जाइये, जहाँ बसै ब्रजराज ।
गोरस-बेचन हरि मिलन, एक पन्थ द्वै काज ॥

मेरे प्यारे मोहना, वंशी नेंकु बजाय ।
तेरी वंशी मन हर्‌यौ, घर अँगना न सुहाय ॥

कामधेनु कलपत रही, हों न भई ब्रज गाय ।
राधा देती दोहनी, मोहन दुहते आय ॥

लाली मेरे लाल की, जित देखूँ तित लाल ।
लाली देखन मैं गई, मैं भी ह्वै गई लाल ॥

श्रीराधिकाप्रेम की अनन्यता

आँख मिली मनमोहन सों, वृषभानुलली मन में मुसकानी ।
भौंह मरोंर कें दूसर ओर, कछू वह घूँघट में शरमानी ॥
देखि निहाल भई सजनी, वह सूरति या मनमाँहि समानी ।
औरन की परवाह नहीं, अपनी ठकुराइन राधिकारानी ॥

खेलत-खेलत कुंजन में, जब प्यास लगी अति ही अकुलानी ।
ललिता सर कौ जलपान करायकें, लालन सेज पै लाय सुलानी ।
चाँपत लाल पिया पग कों, रसभाव महा कछु जातन जानी ।
औरन की परवाह नहीं, अपनी ठकुराइन राधिकारानी ॥

लाल भये जिनके बस में, उनकों लखिकें बिनमोल बिकानी ।
केलि करें यमुना तट पै, अँखियाँ जिनकी गई प्रेम दिवानी ।
रसरंग रहैं उरझैं सुरझैं, सखि एकदिपै नहिं होय लखानी ।
औरन की परवाह नहीं, अपनी ठकुराइन राधिकारानी ॥

पूनम की रजनी सजनी यह, चाँदनी फैल रही सुखदानी ।
यमुना तट पै मुरली सुनिकें, वृषभानुलली अति ही सकुचानी ।
रास कियौ हरि के सँग में, अति चाव भरी नहिं जात बखानी ।
औरन की परवाह नहीं, अपनी ठकुराइन राधिकारानी ॥

शुद्ध करै तन कों मन कों, सखि प्रेम सरोवर कौ यह पानी ।
करिकैं अस्नान इहाँ हमको, ब्रज की रज कों निज शीष चढ़ानी ।
बास मिलै ब्रजमण्डल कौ, बिनती हमकों इतनी ही सुनानी ।
औरन की परवाह नहीं, अपनी ठकुराइन राधिकारानी ॥

ब्रजमण्डल के रसिया हम हैं, नित प्रीत करैं हरि सों मनमानी ।
डोलत कुञ्ज निकुञ्जन में, गुन गान करें रस प्रेम कहानी ।
जो मनमोहन संग रहै, वह भानुलली हमनें पहिचानी ।
औरन की परवाह नहीं, अपनी ठकुराइन राधिकारानी ॥

नाम महाधन है अपनौ, नहिं दूसरि सम्पति और कमानी ।
छोड़ अटारी अटा जग के, हमकों कुटिया ब्रजमाँहि छवानी ।
टूँक मिलैं रसिक रसिकन के सदा, अरु सेवें सदा यमुना महारानी ।
औरन की परवाह नहीं, अपनी ठकुराइन राधिकारानी ॥

वास करें ब्रज में फिर दूसरे, देसन की कहुँ राह न जानी ।
प्रेम समाय रह्यौ हिय में, बनिहै कबहू न विरागी न ज्ञानी ।
संग रहैं रसिकों के सदा, अरु बात करैं रसकी रस सानी ।
औरन की परवाह नहीं, अपनी ठकुराइन राधिकारानी ॥

जिनके पग चाँपत नन्दलला, वो तो वेद प्रसिद्ध सुभायन में ।
सुर तेतिस कोटि की कौन गनै, जहाँ ब्रह्म रह्यौ लपटायन में ॥
कविलाल गुपाल के जीवनमूल, शशिकांति की कोटि प्रभाइन में ।
रहुरे मन तोसों करूँ विनती, वृषभानुकिसोरी के पाँयन में ॥

प्रेमसरोबर छाँड़िकें तू, भटकै हैं क्यों चित्त की चायन में ।
जहँ गेंदा गुलाब अनेक खिले, बैठौ क्यों करीर की छाँयन में ।
प्रेमी कहैं प्रेम कौ पंथ यही, रहिवौ करि सूधे सुभायन में ।
मन तोहि मिलै विश्राम यही, वृषभानुकिशोरी के पाँयन में ॥

चन्द सौ आनन कंचन सौ तन, हौ लखिके बिन मोल बिकानी ।
औ अरविन्द-सी आँखिन कों 'हठी' देखत मेरी ये आँख सिरानी ॥
राजत है मनमोहन के सँग, बारौं मैं कोटि रमा रति बानी ।
जीवन मूरि सबै ब्रज की, ठकुरानी हमारी श्रीराधिकारानी ॥

नवनीत गुलाब से कोमल हैं, 'हठी' कञ्ज की मंजुलता इनमें ।
गुलालाला गुलाल प्रवाल जपा, छवि ऐसी न देखी ललाइनमें ।
मुनि मानसमन्दिर मध्य बसै, बस होत है सूधे सुभायन में ।
रहुरे मन तू चित चाहन सों, वृषभानुकिसोरी के पायन में ॥

ब्रह्म में ढूँढयौ पुरानन कानन, वेद रिचा सुनी चौगुने चायन ।
देख्यौ सुन्यौ कबहू न कितै, वह कैसे सरूप औ कैसे सुभायन ॥
टेरत हेरत हारि फिर्‌यौ 'रसखान' बतायौ न लोग लुगाइन ।
देख्यौ दुरयौ वह कुंजकुटीर में, बैठ्‌यौ पलोटत राधिका पायन ॥

साँवरि राधिका मान कियौ, परि पाँयन गोरे गोविंद मनावत ।
नैन निचोहे रहैं उनके नहिं, वैन विनै के न ये कहि आवत ॥
हारी सखी सिख दै 'रतनाकर' हेरि मुखाम्बुज फेरि हँसावत ।
ठान न आवत मान उन्हें, उनको नहिं मान मनावत आवत ॥

हे अलि री लखि आजु कौ खेल, बखान कहाँ लों करै मति मोरी ।
राधे के शीश पै मोरपखा, मुरली लकुटी कटि में पट डोरी ॥
वैनी विराजत लाल के भाल, ओ चूनर रंग कसूम में बोरी ।
मान ह्वै मोहन बैठि रहे, सो मनावत श्रीवृषभानु किशोरी ॥

अपनी ओर की चाहें लिखी, लिखि जात कथा उत मोहन ओर की ।
प्यारी दयाकरि बेगि मिलौ, सहिजात व्यथा नहिं मैन मरोर की॥
आपुहि बाँचत अंग लगावति, है किन आनि चिठी चितचोर की ।
राधिका मौन रही धर ध्यान सों, है गई मूरति नंद किशोर की ॥

सोहत मोरपखा सिर पै, कल भाल पै केसर खोर दिये जू ।
झूमत घूमत जात सिहात, नवीन प्रसून के हार हिये जू ॥
दीजै कहा उपमा 'बलवीर' पड़ी पछितात लजात हिये जू ।
या छवि सों विहरैं जमुना तट, राधिका स्याम सिंगार किये जू ॥

डोलत बोलत राधिका राधिका, राधा रटौ सुख होय अगाधा ।
सोवत जागत राधिका राधिका, राधिका नाम सबै सुख साधा ॥
लेतहु देतहु राधिका राधिका, तौ बलवीर टरै जग बाधा ।
होय अनन्द अगाधा तबै, दिन रैन कहौ मुख राधा श्रीराधा ॥

श्रीवृषभानुसुता पदपंकज, मेरी सदा यह जीवन मूर है ।
याही के नाम सों ध्यान रहै, नित जाके रहे जग कंटक दूर है ॥
श्रीवनराज निवास दियौ, जिन और दियौ सुखहू भरपूर है ।
याकों बिसार जो औरें भजौ, 'बलबीर' जू जानिये तौ मुख धूर है ॥

श्रीवृषभानुसुता पदपंकज, मैं निसिवासर ध्यान लगायौ ।
मेरी तौ जीवन मूर यही, कलपुञ्ज सोई मुख गाय सुनायौ ॥
जाकौ अहो 'बलवीर' त्रिलोक के, नायक हू नित सीस नवायौ ।
श्रीगुरुदेव दया करि राधिका, मंत्र सिरोमनि नाम बतायौ ॥

श्रीकृष्णरस

जामा बन्यौ जरितारिकौ सुन्दर, लाल है बन्द अरु जर्द किनारी ।
झालरदार बन्यौ पटुका अरु, मोतिन की छबि लागत प्यारी ॥
जैसी ये चाल चलें ब्रजराज, अहो बलिहारी है मौज बिहारी ।
देखत नैनन ताकि रहे झुकि, झाँकी झरोखे में बाँकेबिहारी ॥

अङ्ग ही अङ्ग जड़ावजड़े, अरु सीसबनी पगिया जरितारी ।
मोतिन माल हियै लटकै, लटुआ लटकैं लट घूँघरबारी ॥
पूरन पुन्यन ते 'रसखान', ये माधुरी मूरति आन निहारी ।
चारों दिसा के महा अघनाशक, झाँकी झरोके में बाँकेबिहारी ॥

मोरपखा गरे गुञ्जकी माल, किये बरवेष बड़ी छबि छाई ।
पीतपटी दुपटी कटिमें, लपटी लकुटी 'हठी' मो मन भाई ॥
छूटी लटें डुलें कुण्डल कान, बजै मुरली धुनि मन्द सुहाई ।
कोटिन काम गुलाम किये, जब कान्ह ह्वै भानुलली बन आई ॥

राधिका पायकै सैन सबै, झपटी मनमोहन पै ब्रजनारी ।
छीन पीताम्बर कामरिया, पहिराई कसूमर सुन्दर सारी ॥
आँखन काजर पाँय महावर, साँवरो नैनन खात हहारी ।
भानुललीकी गली में अली न, भलीविधि नाच नचाये बिहारी ॥

श्री राधा

तिरछा है किरीट कसा उर में, तिरछा बनमाल पड़ा रहता है ।
तिरछी कटि-काछनी है जिसमें, सुखसिन्धु सदा उमड़ा रहता है ॥
तिरछे पदकञ्ज कदम्ब तेरे, तिरछे दृग तान खड़ा रहता है ।
किस भाँति निकालें कहो दिलसे, तिरछा घनश्याम अड़ा रहता है ॥

पहने यह कुण्डल योंही रहो, अलकावलि योंही सँवारे रहो ।
अधरामृत पान कराते हुए, मुरली कर-कञ्ज में धारे रहो ॥
नहीं और विशेष करो कुछ तो, अनियारे दृगों से निहारे रहो ।
कहीं जाओ न मोहन ! छोड़ हमें, बने जीवनप्राण हमारे रहो ॥

यदि कुन्तलकाले सँवारे ही थे, तो कपोलों पै यों लटका ना नथा ।
जब कज्जलरेख लगायी थी तो, तिरछे दृग बाण चलाना न था ॥
पहना पटपीत मनोहर तो, हर बार उसे फहराना न था ।
यह सुन्दर वेश बनाया था तो, इस भाँति हमें तड़पाना न था ॥

ब्रजमण्डल का ही सितारा नहीं, जगती तल का उजियारा है तू ।
मनमोहकता इतनी तुझमें, सबके मन को अति प्यारा है तू ॥
यह जीवन क्यों न निछाबर हो, जब जीवन का ही सहारा है तू ।
किसभांति बिसारूँ बता तुझको, मनमोहन प्राणपियारा है तू ॥

मुसकान से काम तमाम हुआ, तिरछे दृग क्यों अब तानता है ।
अति सुन्दर गोल कपोल तेरे, भृकुटी-लकुटी पहिचानता है ॥
परिणाम में दुःखको जानता है, पर हाय नहीं हठ ठानता है ।
बहुतेरा कहा पर तेरे बिना, मन मेरा न मोहन ! मानता है ॥

मुखचन्द्र मनोहर देखे बिना, अब तो सुख मोहन होता नहीं ।
तुम माया के वेशधरो कितने, पर मैं अब खाऊँगा गोता नहीं ।
सच मानों वियोग में आपके मैं, दिन में जगता निशि सोता नहीं ।
यदि चित्त चुराते नहीं तुम तो, इतना कभी भूल के रोता नहीं ॥

मेवा भई बहु काबुल में, औ वृन्दावन आय करील उगाये ।
श्रीराधिका सी सुकुमारि विहाय कें, कूबरी सों अतिनेह बढ़ाये ॥
मेवा तजी दुर्योधन की, छिलका विदुराइन के घर खाये ।
'ठाकुर' ठाकुर की कहिये कहा, ठाकुर बावरे होते ही आये ॥

ब्रजभक्त-गरीब गुपालरुचै, तजि आयो सिंहासन श्रीपुर को ।
तहाँ शेष की सेज पै सुक्ख कहाँ, यहाँ नित्त फिरै रज में रुरको ॥
कञ्चन तजि साधुन के कर सों, सतुआ नितभोग रुच्यौ गुरको ।
भगिजा अरे ग्यानी गुमानी धनी, यहाँ राज है बावरे ठाकुरको ॥

भाग्य तौ छोटो दियौ विधि नें, सोऊ हाथ विलाँदिन आंगुरको ।
नहीं देख्यौ सुन्यो हुत्यो काननतें, बैकुण्ठ बड़ौ परमेसुर को ॥
बौरे सबै ब्रजवासी लह्यौ कब, ज्ञान कृपा करि सद्गुरको ।
ये ही उतारि है पार हमें, है भरोसो या बावरे ठाकुरको ॥

द्विजतन्दुल चाबिदिये त्रैलोक, बन्यौ बलि द्वार पै आप भिखारी ।
इन्द्र कों मेटिकें पाहन पूजि, पुजाय बन्यौ तहाँ आप पुजारी ॥
प्रीति तजी ब्रजगोपिन सों, जाहि कूबरी नाइन लागत प्यारी ।
वेदहु बावरे नेति कहैं, ऐसे बाबरे ठाकुर की बलिहारी ॥

द्विज भक्त अजामिल पापी कियो, शिव शीष चढाय दियौ गुनरीला ।
मांगत छाछ फिरयौ व्रज में, भरे भक्त धनाघर धानकुठीला ॥
द्वारिका की पटरानी तजीं, जाइ रीछ की छोरी पै रीझ्यौ रंगीला ।
शंका करै शिर पाप कमावै को, बावरे ठाकुर की बावरी लीला ॥

खेलत फाग में लाड़िलीलाल कौ, लै मुसक्याइ गई एक गोरी ।
सीस पै सारी सजा तरतार की, कंचुकी धार दई बरओरी ॥
लै बलबीर दियौ दृग अंजन, दीनौ बनाय गुपाल कों गोरी ।
अंग लगाइ, कही मुसकाइ, लला फिर खेलन आइयो होरी ॥

खञ्जन नैन फंसे पिंजरा, छवि नांहि रहैं थिर कैसेहु माई ।
छूटि गयौ कुलकानि सखी, 'रसखानि' लखी मुसकानि सुहाई ।
चित्र कढे से रहैं मेरे नैन, न बैन कढैं मुख दीनी दुहाई ।
कैसी करौ जित जाँउ अरी, सब बोलि उठें यह बाबरी आई ॥

कानन दै अंगुरी रहिवो, जबहीं मुरली धुनि मन्द बजै है ।
मोहनी तानन सों 'रसखानि' अटा चढ़ि गोधन गैहै तो गैहै ॥
टेरि कहों सिगरे ब्रज लोगनि, काल्हि कोऊ कितनी समुझै है ।
माई री वा मुखकी मुसकानि, संभारी न जैहै न जैहै न जैहै ॥

बाढ्यौ करै दिनही छिनही, छिन कोटि उपाय करौ न बुझाई ।
दाहत लाज समाज सुखै गुरु, की भय नींद सबै संग लाई ॥
छीजत देह के साथ में प्रानहु, हा 'हरिचंद' करों का उपाई ।
क्यों हू बुझें नहिं आँसू के नीरन, लालन कैसी दवारि लगाई ॥

व्रजवासी वियोगिन के घर में, जग छांड़ि कें क्यों जनमाई हमें ।
मिलितौ बड़ी दूर रह्यौ 'हरिचंद', दई इकनाम धराई हमें ॥
जग के सिगरे सुख सों ठगि कें, सहिने कों यहीं है जिवाई हमें ।
केहि बरसों हाय दई विधिना, दुख देखिने ही कों बनाई हमें ॥

मारग प्रेम कौ को समुझै, 'हरिचंद' यथारथ होत यथा है ।
लाभ कछू न पुकारन में, बदनाम ही होन की सारी कथा है ॥
जानत है जिय मेरौ भली, विधि और उपाय सबै विरथा है ।
बाबरे हैं ब्रज के सगरे, मोहि नाहक पूछत कौन विथा है ॥

रोकहिं जो तो अमंगल होय, औ प्रेम नसै जो कहै पिय जाइये ।
जो कहैं जाहु न तौ प्रभुता, जो कछू न कहें तौ सनेह नसाइये ।
जौ 'हरिचंद' कहें तुमरे, बिन जीहैं न तौ यह क्यों पतियाइये ।
तासों पयान समै तुमरे, हम का कहें आपै हमें समुझाइये ॥

इन नैनन में वह सांवरी मूरति, देखत आनि अरी सो अरी ।
अबतो है निबाहिबौ याको भलौ, 'हरिचंद' जू प्रीति करी सो करी ॥
उन खंजन के मद गंजन सों, अंखिया ये हमारी लरी सो लरी ।
अब लोग बचाव करौ तो करौ, हम प्रेम के फंद परी सो परी ॥

वह सुन्दर रूप बिलोकि सखी, मन हाथ तें मेरे भग्यो सो भग्यौ ।
चित माधुरी मूरति देखत ही, 'हरिचंद' जाय पग्यौ सो पग्यौ ।
मोहि औरन सों कछू काम नहीं, अब तौ जो कलंक लग्यौ सो लग्यौ ।
रंग दूसरौ और चढैगौ नहीं, अलि सांवरौ रंग रंग्यौ सो रंग्यौ ॥

मनमोहन तें बिछुरी जब सों, तन आंसुन सों सदा धोती हैं ।
'हरिचंद' जू प्रेमके फंद परीं, कुल की कुल लाजनि खोवती हैं ॥
दुख के दिन कों कोऊ भांति वितै, विरहागम रैन संजोवति हैं ।
हम हीं अपनी सदाँ जानें सखी, निसि सोवतीं हैं किधों रोवती हैं ॥

धारन दीजिए धीर हिए, कुल कानि कों आजु बिगारनि दीजिए ।
मारन दीजिए लाज सबै 'हरिचंद' कलंक पसारन दीजिए ॥
चार चवार कों चहुँ ओर सों, सोर मचाइ पुकारन दीजिए ।
छांडि संकोच न चंद मुखै, भरि लोचन आजु निहारन दीजिए ॥

घन आनंद जीवन मूल सुजान, की कोंधन हू न कहूँ दरसैं ।
सुन जानिये धौं कित छाय रहे, दृग चातिक प्रान तपे तरसें ॥
बिन पावस तो इन थ्यावसहो न, सु क्यों करिये अब सो परसैं ।
बदरा बरसें ऋतु में घिरिके, नितही अंखियाँ उघरी बरसें ॥

अंतरहौ, किधों अंतरहौ, दृगफारि फिरोंकि अभागिनि भीरों ।
आगिजरों, अकि पानिपरों, अब कैसी करों, हिय का विधि धीरों ।
जो घनआनंद ऐसी रुची, तौ कहा बसहै अहा प्रानन पीरों ।
पाऊँ कहाँ हरिहाय तुम्हें, धरनी में धंसोंके अकासहिं चीरों ॥

पर काजहिं देह कों धारि फिरौ, परजन्य जथारथ ह्वै दरसौ ।
निधिनोर सुधा के समान करौ, सबही विधि सज्जनता सरसौ ॥
'घन आनंद' जीवनदायक हौ, कछु मोरि ये पीर हिये परसौ ।
कबहूवा विसासी सुजान के आँगन, मो अँसुवा निहिलै बरसौ ॥

उठती अभिलाषा यही उर में, उनके वनमाल का फूल बनूँ ।
कटि काछनी हो लिपटूँ कटि में, अथवा पटपीत दुकूल बनूँ ।
'हरेकृष्ण' पिऊँ अधरामृत को, यदि मैं मुरली रसमूल बनूँ ।
पद पीडिताहो सुखपाऊँ महा, कही भाग्य से जो ब्रज धूल बनूँ ॥

किस भाँति छुऐं अपने करसे, पद पंकज है सुकुमार तेरा ।
'हरेकृष्ण' बसा इन नयनन में, अति सुन्दर रूप उदार तेरा ॥
नहीं और किसी की जरूरत है, हमको बस चाहिए प्यार तेरा ।
तनपै, मनपै, धनपै, सबपै, इस जीवन पै अधिकार तेरा ॥

हरेकृष्ण सदा कहते कहते, मन चाहे जहाँ वहाँ घूमा करूँ ।
मधु मोहन रूप का पीकर के , उसमें उन्मत्त हो झूमा करूँ ।
अति सुन्दर वेश व्रजेश तेरा, रमा रोमही रोममें रूमा करूँ ।
मनमन्दिर में बिठलाके तुझे, पग तेरे निरन्तर चूमा करूँ ॥

तजते घर बार वृथा सब क्यों, यदि मोहन तेरा इशारा न होता ।
रहते हम भी भवसागर में, पहले जो किसी को उबारा न होता ।
हम रोते ही क्यों बिलखाकर के, यदि तू मन प्राण हमारा न होता ।
इस प्रेम के पन्थ में हाय प्रभो, सिर देकर भी छुटकारा न होता ॥

दृग की इस स्याम कनीनिका में, घनश्याम तुम्हीं को छिपाये रहूं ।
पल मात्र को जाने न बाहर दूँ, परदा पलकों का गिराये रहूं ।
बस चाह यही मनमोहन ! है, चरणों पै सदा चितलाये रहूं ।
सब भांति तुम्हारा रहूं मैं बना, तुमको अपना ही बनाये रहूं ॥

नहिं चित्र लिखा न चरित्र सुना, वह सुन्दर स्याम को माने ही क्या ?
मन में न बसा मनमोहन तो, वह ठान किसी पर ठाने ही क्या ?
जिस बन्दर ने इमली ही चखी, वह स्वाद सुधा पहिचाने ही क्या ?
जिसने कभी प्रेम किया ही नहीं, वह प्रेम की आहों को जाने ही क्या ?

जगदीश से नाता जुड़ा जब है, तब क्या जगकी परवाह करें ।
बस याद में होते हुए उनकी, पलकों पर अश्रु प्रवाह करें ।
उतनी वह दूर भगें हमसे, जितनी उनकी हम चाह करें ।
सुख अद्भुत प्रेम की पीड़ा में है, हम आह करें वह वाह करें ॥

ऐसे नहीं हम चाहनहार जो, आज तुम्हें कल और को चाहें ।
फेंकि दें आँखि निकासि दोऊ, जोपै और की ओर लखें, औ लखावें ॥
लाख मिलौ तुमसों बढिकै, तुमही कों चहें तुमही को सराहें ।
प्रान रहें जब लों उर में, तब लों हम नेह कौ नातौ निबाहें ॥

श्रीब्रज-महिमान्वित पद

वृन्दावन धाम को बास भलौ, जहँ पास बहें जमुना पटरानी ।
जो नर न्हाइ के ध्यान धरें, तिनकों बैकुण्ठ मिले रजधानी ।
चारहु वेद बखान करें, अरु सन्त गुनीन मुनी मनमानी ।
जमुना जम दूतन टारत है, भव तारत हैं श्रीराधिकारानी ॥

ब्रज धूरिही प्रान सों प्यारी लगै, ब्रजमण्डल मांहि बसाये रहौ ।
रसिकों के सुसंग में मस्त रहूं, जग जाल सों मोहि बचाये रहौ ॥
नित बाँकी ये झाँकी निहारा करूँ, छबि छाक सों नाथ छकाये रहौ ।
अहो बाँकेबिहारी यही विनती, मेरे नैनों से नैना मिलाये रहौ ॥

हे वृषभानु सुते ललिते ! हम कौन कियौ अपराध तिहारौ ।
काढ़ि दियौ ब्रजमण्डल ते, कछु औरहु दण्ड रह्यौ अतिभारी ।
सो करि लेहु, हमें पुनि देहु, निकुञ्ज कुटी यमुना तट प्यारौ ।
अपनौ जन जानि दया की निधान, भई सो भई अब बेगि सँभारौ ॥

हरेकृष्ण ही कृष्ण का कीर्तन में, मचता रहै घनघोर यहाँ ।
सुनलो सुनलो यमुनाजल में, मुरलीध्वनि का वह शोर यहाँ ॥
तरु राधे ही राधे पुकार रहे, खिंचता मन है बरजोर यहाँ ।
कर प्रेम कोई लख ले उसको, रहता अब भी चितचोर यहाँ ॥

वह मोद न मुक्ति के मन्दिर में, जो प्रमोदभरा ब्रजधाम में है ।
उतनी छविराशि अनन्त कहाँ, जितनी छविसुन्दर श्याम में है ॥
शशि में न सरोज सुधारस में, न ललाम लता अभिराम में है ।
उतना सुख और कहीं भी नहीं, जितना सुख कृष्ण के नाम में है ॥

कहीं मानप्रतिष्ठा मिले न मिले, अपमान गले में बंधाना पड़े ।
जल भोजन की परवाह नहीं, करके व्रत जन्म बिताना पड़े ॥
अभिलाषा नहीं सुख की कुछ भी, दुख नित्य नवीन उठाना पड़े ।
ब्रजभूमि के बाहर किंतु प्रभो, हमको कभी भूल न जाना पड़े ॥

न बच्यौ कोई वेदपुराण पढ़े, न बच्यौ कोई सीस रखाये जटा ।
न बच्यौ कोई जंगलवास किये, न बच्यौ कोई ऊँची चिनाये अटा ।
स्वारथ कौ परिवार बस्यौ, ये चार दिना के हैं ठाठ ठटा ।
भज ले हरिकृष्ण अरी रसने, तोहि घेरत आवत काल घटा ॥

क्षणभंगुर जीवन की कलिका, कल प्रात को जाने खिली न खिली ।
मलयाचल की शुचि शीतल, मंद सुगंध समीर मिली न मिली ।
कलिकाल कुठार लिये फिरता, तन नम्र है चोट झिली न झिली ।
भज ले हरिनाम अरी रसने, फिर अन्त समय में हिली न हिली ॥

बुद्धि बड़ी चतुराई बड़ी, मनमें ममता अतिसय लिपटी है ।
ज्ञान बड़ौ धन धाम बड़ौ, करतूत बड़ी जग में प्रगटी है ॥
गज बाजि हू द्वार मनुष्य हजार, तो इन्द्र समान में कौन घटी है ।
सो सब कृष्ण की भक्ति बिना, मानों सुन्दर नारि की नाक कटी है ॥

जब दांत न थे तब दूध दियो, दांत दिये तो कों अन्न हू दैहै ।
जल में थल में पशु पक्षिन में, सबकी सुधि लेत वो तेरी हू लैहै ।
जान को देत अजान को देत, जहान को देत वे तोकों भी दैहै ।
रे मनमूरख सोच करै क्यूं, सोच करे कछू हाथ न ऐ है ॥

जाकी कृपा शुक ज्ञानी भये, अति दानी औ ध्यानी भए त्रिपुरारी ।
जाकी कृपा विधि (वेद) रचे, भए व्यास पुरानन के अधिकारी ।
जाकी कृपा ते त्रिलोकी धनी, सु कहावत श्रीब्रजचन्द्र बिहारी ।
लोक घटी ते 'हठी' कों बचाउ, कृपा करि श्रीवृषभानु दुलारी ॥

तात मिलें गजमानि मिलें, सुत भ्रात मिलें युवती सुखदाई ।
राज मिलें गज वाजि मिलें, सब साज मिलें मनबाँछित पाई ।
लोक मिलें सुर लोक मिलें, विधि लोक मिलें अरु बैकुण्ठहिं जाई ।
सुन्दर और मिलै सबही सुख, सन्त समागम दुर्लभ भाई ॥

तू कछु और विचारत है नर, तेरो विचार धरयौ ही रहैगो ।
कोटि उपाय करै धन के हित, भाग लिख्यौ तितनौई लहैगो ॥
भोर की सांझ घरी पल मांझ, सो काल अचानक आय गहैगो ।
राम भज्यौ न सुकाम कियौ, सुन्दर यों पछिताइ रहैगो ॥

पंकज सो मुख मञ्जु महा, मृदु बैन बदे श्रुति के अनुसारी ।
अंग सुठौन अनंग प्रभा, दृग साखि सभासद् आनंदकारी ॥
सुन्दर बाम रमैं रति ज्यौं, हित कोटि पतिव्रत के अधिकारी ।
ऐसे भये तौ कहा हरिदास, लखे नहिं नित्य किशोर बिहारी ॥

कवित्त

रसिकाराध्य राधा

कीरत महारानी, वृषभानु आदि गोप-गोपी,
कैसै या कलि के माहि धन्य कहलावते ।
कौन तप करतो या ब्रज माहि बसिवे को,
कौन सो बैकुंठ हू के सुख बिसरावते ॥
नागरिया जौ पै राधे प्रगट हू होती नाहिं,
श्याम पर कामहूँ के विपती कहावते ।
छाय जाती जड़ता, बिलाय जाते कवि सब,
जर जातो रस तो रसिक कहा गावते ॥

पायौ बड़े भागिनि सौं आसरौ किशोरीजू कौ,
और निरबाही नीकैं ताहि गही गहि रे ।
नैननि ते निरखि लड़ैती को वदन चन्द,
ताहि कौ चकोर ह्वैकै रूप सुधा लहि रे ॥
स्वामिनी की कृपा तैं अधीन ह्वैहैं ब्रजनिधि,
ताते रसना सौं नित स्यामा नाम कहि रे ।
मेरे मन मीत जो कही मानै मेरी तौ तू,
राधा पद कञ्ज कौ भ्रमर ह्वै कैं रहि रे ॥

मेरे गुरु-माता-पिता लाड़ली किशोरी एक,
इनहीं को बल राखों निस-दिन मन में ।
इनहीं की दासी, सुखरासी सुख चाहूं सदा,
प्यारी छबि देखों कभी जमुना-पुलिन में ॥

नित उठ चाव सों निहारूँ बाट प्यारी जू की,
छबि देख-देख जीऊँ नैनन की सैनन में ।
लाडली जू एक बार हार बार-चार-चार,
चूडी पहिराऊ नित प्यारी सखी जन में ॥

सहज सुभाव परयौ नवल किशोरी जू कौ,
मृदुता दयालुता-कृपालुता की रासि है ।
नेकहूँ न रिस कहूँ, भूलेहू न होत सखी,
रहत प्रसन्न सदा हिये मुख हासि है ॥
ऐसी सुकुमारी प्यारे लालहू की प्रान प्यारी,
धन्य-धन्य-धन्य तेई जिनके उपासि है ।
हित ध्रुव और सुख जहाँ लगि देखियत,
सुनियत तहाँ लगि सबै दुःख पासि है ॥

श्रीकृष्णाराधना

स्याम तन स्याम मन स्याम ही हमारो धन,
आठों याम ऊधो हमें स्याम ही सों काम है ।
स्याम हीये, स्याम जीये, स्याम बिनु नाहिं तीये,
आंधे की-सी लाकरी अधार नाम स्याम है ।
स्याम गति, स्याम मति, स्याम ही हैं प्रानपति,
स्याम सुखदाई सों भलाई सोभा धाम है ।
ऊधौ तुम भये बौरे पाती लैके आये दौरे,
योग कहाँ राखै यहाँ रोम-रोम स्याम है ॥

टेढ़े हू सुन्दर नैन, टेढ़े मुख कहे बैन,
टेढ़ो हू मुकुट, बात टेढ़ी कछु कहै गयो ।
टेढ़े घुंघराले बाल, टेढ़ी गल फूल माल,
टेढ़ो हू बुलाक मेरे चित्त में बसै गयो ॥
टेढ़े पग ऊपर नुपुर झनकार करैं,
बाँसुरी बजाय मेरे चित्त को चुरै गयो ।
ऐसी तेरी टेढ़ीन को ध्यान धरैं मयाराम,
लटपटी पाग से लपेट मन लै गयो ॥

माथे पै मुकुट देख, चन्द्रिका की चटक देख,
छबि की लटक देख, रूप रस पीजिये ।
लोचन विशाल देख, गरे गुञ्माल देख,
अधर रसाल देख, चित चोंप कीजिए ॥
कुंडल हलन देख, अलकैं बलन देख,
पलकैं चलन देख, सरबस दीजिये ।
पीताम्बर छोर देख मुरली की घोर देख,
सांवरे की ओर देख, देखवो ही कीजिये ॥

टेढ़ी चन्द्रिका है याकी भ्रकुटी चितवन है टेढ़ी,
टेढ़े-टेढ़े लक्षण अनेक कान्ह कारे के ।
टेढ़े पट टेढ़ी क्रीट टेढ़े हैं ध्रुवण पुञ्ज,
सीधे से हिये में बसत निष्कपट बारे के ॥
टेढ़े सों प्रसन्न टेढ़ी बातन सों अति प्रसन्न,

टेढ़े-टेढ़े अक्षर कढ़त मुख प्यारे के ।
हम सों टेढ़ाई भूल मत करियो कोऊ,
हम हैं उपासी एक टेढ़ी टांग बारे के ॥

छैल है छबीला महाबली महीपति है,
जाको नाम लेत होत सफल जम्हारो है ।
चित्र है विचित्र अनित्य न नित्य जाकों,
देखत ब्रजांगना आवत तमारौ है ॥
बाँकी है त्रिभंगी है स्वयंभू है सनातन है,
सब जीव जन्तु पशु पक्षिन कौ सहारौ है ।
चोर है लवार सु लम्पट चटोकरा है,
टेढ़ी टांग बारौ इष्ट देवता हमारौ है ॥

ब्रह्माहू के ध्यान में न आवै कभू एक छिन,
शंकर समाधि लाय ध्यान धरत गाढ़ो है ।
ऋषि और मुनि जाकौ रैन-दिन धरैं ध्यान,
ध्यान में न आवै कभू तासौ हेत बाढ़ो है ॥
सोई निरञ्जन जाकी माया को न आवे अन्त,
ध्यानी ध्यान लाय रहै सहैं धूप जाड़ो है ।
देखो भाग्य ब्रज बनितन के री आज आली,
ह्वै के हू अनन्त नवनीत माँगै ठाढ़ो है ॥

नैन-चकोर मुख-चंद हू पै बारि डारौं,
बारि डारौ चित्तहि मनमोहन चितचोर पै ।
प्रानहू कों वारि डारौ हँसन दसन लाल,
हेरन कुटिलता और लोचन की कोर पै ॥
वारि डारौं मनहि सुअंग-अंग स्यामा-स्याम,
महल मिलाप रस-रास की झकोर पै ।
अतिहि सुघर बर सोहत त्रिभंगी लाल,
सरबस वारौं वा ग्रीवा की मरोर पै ॥

पहले ही जाय मिले गुन में स्रवन, फेरी
रूप सुधा मधि कीनो, नैनहू पयान है ।
हँसनि, नटनि, चितवनि, मुसुकानि,
सुघराई, रसिकाई मिली मतिपय पान है ॥
मोहि-मोहि मोहनमयी री मन मेरो भयो,
'हरीचन्द' भेद न परत पहचान है ।
कान्ह भए प्रानमय, प्रान भए कान्हमय,
हिये में न जान परै कान्ह है कि प्रान है ॥

कौन रूप, कौन रंग, कौन सोभा, कौन अङ्ग,
कौन काज महाराज त्रिया वेष कियो है ।
नाकहू में नत्थ, हत्थ चूरिन भरे हैं लाल,
कानन में कर्ण फूल, बेंदी भाल दियो है ॥
चन्द्रहार उर राजै, चम्पकली कंठ साजैं,
मुकुट उतार ओढ़ चूनरी को लीयो है ।
नारायन स्वामी देख चीन्ह गई प्यारी भेख,
खिल-खिल हँसि राधे पट मुख दीयो है ॥

श्रीब्रजरस

एक रज-रेणुका पै चिंतामणि वारि डारों,
बारि डारों विश्व सेवाकुञ्ज के बिहार पै ।
लतन की पत्तन पै कोटि कल्प वारि डारों,
रंभाहू को वारि डारों गोपिन के द्वार पै ॥
ब्रज की पनिहारिन पै शची-रति वारि डारों,
बैकुण्ठ हूं वारि डारों कालिंदी की धार पै ।
कहैं अभैराम एक राधाजू को जानत हों,
देवन को वारि डारों नन्द के कुमार पै ॥

गिरि कीजै गोधन मयूर नव कुञ्जन को,
पशु कीजै महाराज नन्द के बगर को ।
नर कीजै तौन जौन राधे-राधे नाम रटै,
तट कीजै वर कूल कालिंदी कगर को ।
इतने पै जोई कछु कीजिये कुँवर कान्ह,
राखिये न आन फेर हठी के झगर को ।
गोपी-पद-पंकज पराग कीजै महाराज,
तृन कीजै रावरेई गोकुल नगर को ॥

वृन्दाबन धाम नीको ब्रज को विश्राम नीको,
श्यामा-श्याम नाम नीको मन्दिर अनन्द को ।
कालीदह-नान्ह नीको, यमुना को नीर नीको,

रेणुका को खान नीको, स्वाद नीको कन्द को ॥
राधा-कृष्ण कुण्ड नीको, सन्तन को संग नीको,
गौर श्याम रंग नीको, अङ्ग युगचन्द को ।
नील-पीतपट नीको, बंसीवट तट नीको,
ललित किसोरी नीकी, नट नीको नन्द को ॥

वृन्दावन आनन्द बिहार चारु दम्पति के,
ताको दिन-रात बात सुनि-सुनि जियो करूँ ।
ललित हिंडोरा, सांझी, रास रंग दीप माला,
फूलनि कुञ्ज रुचि रचना कियो करूँ ॥
नित ही बसन्त यहाँ होरी चित चोरी चाव,
नागरिया केलि ये सकेलि के लियो करूँ ।
दियो करूँ येई और येई सुख लियो करूँ,
येही दिन रैन रसिकन कौ पियो करूँ ॥

सहजै श्रीकृष्ण-कथा ठौर-ठौर होत तहाँ
कीरतन-धुनि मीठी हिय के उलास तैं ।
स्यामा-स्याम रूप-गुन लीला-रंग रंगे लोग,
तिनके न ध्वांत उर प्रेम के प्रकास तै ॥
एरे मन ! मेरे चेत उनही सों करि हेत,
नागर छुडाय देत जग दुःख-पास तैं ।
काम-क्रोध लोभ मोह मच्छरता राग द्वेष,
चाह दाह जैहैं सब वृन्दावन-बास तैं ॥

कीरत सुता के पग-पग पै प्रयाग जहाँ,
केशव की केलि कुञ्ज कोटि-कोटि काशी हैं ।
जमुना में जगन्नाथ रेणुका में रामेश्वर,
तरु-तरु पै परे जहाँ अयोध्या निवासी हैं ॥
गोपिन के द्वारि-द्वारि पै हरिद्वार जहाँ,
बद्री केदार तहाँ फिरत दास दासी हैं ।
स्वर्ग अपवर्ग सुख लेके करंगे कहा,
जानते नहीं हो हम वृन्दावन वासी हैं ॥

रसिकजनों की शिक्षा

गायो न गोपाल मन लाय के निवारि लाज,
पायो न प्रसाद साधु-मंडली में जाय के ।
छायो न धमक वृन्दाविपिन की कुञ्जन में,
रह्यौ न शरन जाय बिट्ठ्लेस राय के ॥
नाथ जू न देख छक्यो छिन है छबीली छबि,
सिंह पौरि परयो नहिं शीश हूँ नवाय के ।
कहै हरिदास तोहि लाजहु न आवै नेक,
जनम गँवायो, ना कमायो कछु आय के ॥

रुचिकर सँवारे नाहिं अङ्ग-अङ्ग स्यामा-स्याम,
ऐरी धिक्कार और नाना कर्म कीवे पै ।
पायन के धोइ निज करन ना पान कियो,

आली अङ्गार परैं सीतल जल पीवे पै ॥
बिचरे न वृन्दावन कुंज लतान तरे,
गाज गिरै अन्य फुलबारी-सुख लीवे पै ।
'ललित किशोरी' बीते बरस अनेक दृग,
देखे न प्रान प्यारे, छार ऐसे जीवे पै ॥

कहा रसखान सुख-संपति सुमार महँ,
कहा महायोगी ह्वै लगाये अङ्ग-छार को ।
कहा साधे पञ्चानल, कहा सोये बीच जल,
कहा जीत लीने राज-सिंधु वार-पार को ॥
जप बार-बार, तप संयम अपार व्रत,
तीरथ हजार, अरे बूझत लवार को ।
सोई है गँवार जिहि कीनो नहिं प्यार,
नहिं सेयो दरबार यार नन्द के कुमार को ॥

कंचन के मन्दिरन दीठि ठहरात नाहिं,
सदा दीपमाल लाल रतन उजारे सों ।
और प्रभुताई सब कहाँ लौं बखानौं,
प्रतिहारिन की भीर भूप टरत न द्वारे सों ॥
गंगा जू में न्हाय मुकुताहल लुटाय,
बेद बीस बार गाय ध्यान कीजत सकारे सों ।
ऐसे ही भये तौ कहा कीन्हौं रसखान,
जोपै चित्त दै न कीन्हीं प्रीति पीत पटवारे सों ॥

रूठे क्यों न राजा बाते कछु नहीं काजा,
एक तू ही महाराजा और कौन को सराहिये ।
रूठे क्यों न भाई, वाते कछु न बसाई,
एक तूही है सहाय और कौन पास जाइये ॥
रूठे शत्रु-मित्र-उदासीन आठौं जाम,
एक रावरे चरनन के नेह को निबाहिये ।
लोक सब झूठा एक तू ही है अनूठा,
सब चूमेंगे अँगूठा, प्रभु तू न रूठा चाहिये ॥

श्रीयुगलरसाराधना

गुनीजन सेवक अरु चाकर चतुर के हैं,
कविन के मीत चित्त हित गुन गानी के ।
सीधेन सों सीधे महाबाँके हम बाँकन सों,
हरीचन्द नकद दमाद अभिमानी के ।
चाहवे की चाह, काहू की न परवाह कछु,
नेही नेह के दिबाने, सूरत निवानी के ।
सर्वस रसिकन के सुदास दास प्रेमिन के,
सखा प्यारे कृष्ण के गुलाम राधारानी के ॥

दास तौ तिहारे, जो उदास तौ तिहारे,
दूर पास तौ तिहारे, आम ख़ास तौ तिहारे हैं ।
दीन तौ तिहारे, मति हीन तौ तिहारे,

जो नवीन तौ तिहारे, प्राचीन तौ तिहारे हैं ।
कूर तौ तिहारे, गुण पूर तौ तिहारे,
राँचे नूर तौ तिहारे, सांचे सूर तौ तिहारे हैं ।
भायक तिहारे, यश गायक तिहारे,
हो सहायक हमारे हम पायक तिहारे हैं ॥

अन्तर उदेह दाह, आँखिन प्रवाह आँसू,
देखी अटपटी चाह भीजनि दहनि है ।
सोइवो न जागिवौ हू, हँसिवो न रोइबोहू,
खोय खोय आप ही में चेटक लहनि है ।
जान प्यारे प्राननि बसत पै अनंदघन,
विरह विषम दसा मूक लों कहनि है ।
जीवन मरन बीच बिना बन्यौ आय,
हाय कौन विधि रची नेही की रहनि है ॥

तेरी बाट हेरत हिराने औ पिराने पत,
थाके ये विकल नैना ताहि जपि जपि रे ।
हिए में उदेग आग लागि रही रात द्यौस,
तोहि कों अराधों साधों तपि तपि रे ।
जान घन आनंद यों दुसह दुहेली दसा,
बीच परि परि प्रान पिसे चपि चपि रे ।
जीव ते भई उदास तऊ मिलन आस,
जीवहिं जिवाऊँ नाम तेरौ जपि जपि रे ॥

काले परे कोस चलि चलि थक गये पाँय,
सुख के कसाले परे ताले परे नस के ।
रोय रोय नैनन में हाले परे जाले परे,
मदन के पाले परे प्रान परवस के ।
'हरीचंद' अङ्गहू हवाले परे रोगन के,
सोगन के भाले परे तन बल खस के ।
पगन में छाले परे नांघिबे कों नाले परे,
तऊ लाल लाले परे रावरे दरस के ॥

इन दुखियांन कूँ न चैन सपने हू मिल्यौ,
तासों सदा व्याकुल विकल अकुलायँगी ।
प्यारे हरिचंदजू की बीती जानि औध प्रान,
चाहत चले पै ये तो संग ना समायँगी ॥
देख्यौ एक बार हू न नैन भरि तोहि यातें,
जौन जौन लोक जैहैं तहाँ पछतायँगी ।
बिना प्रान प्यारे भये दरस तुम्हारे हाय,
मरे हू पै आँखें ये खुली ही रहि जाँयगी ॥

हम तौ तिहारे सब भांति सों कहावें सदा,
हम सों दुराव कौन सौ है सो सुनाइ दै ।
द्वार पै खड़े हैं, बड़ी देर सों अड़े हैं यह,
आशा है हमारी ताहि नेंकु तौ पुराइ दै ।
'हरीचंद' जोरि कर बिनती बखानें यही,
देखि मेरी ओर नेंकु मंद मुसकाइ दै ।
एरी प्रान प्यारी बार बार बलिहारी नेंक,
घूँघट उघारि मोहि बदन दिखाइ दै ॥

गुरुजन बरज रहे री बहु भांति मोहि,
संक तिनहूं की छांड़ि प्रेम रंग रांची मैं ।
त्यों ही बदनामी लई कुलटा कहाई हौं,
कलंकिनिहु बनी ऐसी प्रेम लीक खाँची मैं ।
कहै हरिचन्द सबै छोड़ो प्रान प्यारे काज,
याते जग झूठौ रह्यौ एक भई साँची मैं ।
नेह के बजाइ बाज छोड़ि सब लाज आज,
घूँघट उघारि ब्रजराज हेतु नाँची मैं ॥

संकीर्तनाराधन

मैंने रटना लगाई रे, राधा नाम की ।
मैंने रटना लगाई रे, राधा नाम की ॥ टेक ॥
मेरी पलकों में राधा, मेरी अलकों में राधा ।
मैंने माँग भराई रे, राधा नाम की ॥ मैंने०॥
मेरे नैनों में राधा, मेरे बैनों में राधा ।
मैंने बैनी गुथाई रे, राधा नाम की ॥ मैंने०॥
मेरी दुलरी में राधा, मेरी चुनरी में राधा ।
मैंने नथनी सजाई रे, राधा नाम की ॥मैंने०॥
मेरे चलने में राधा, मेरे हलने में राधा ।
कटि किंकनी बजाई रे, राधा नाम की ॥मैंने०॥
मेरे दाँये बाँये राधा, मेरे आगे पीछे राधा ।
रोम रोम रस छाई रे, राधा नाम की ॥मैंने०॥
मेरे अंग अंग राधा, मेरे संग संग राधा ।
'गोपाल' बंशी बजाई रे, राधा नाम की ॥मैंने०॥

मन भूल मत जइयो राधा रानी के चरण ।
राधारानी के चरण श्यामा प्यारी के चरण ।
बाँके ठाकुर की बाँकी ठकुरानी के चरण ॥टेक॥
वृषभानु की किशोरी सुनी गैया हूं ते भोरी ।
प्रीति जानिके हूं थोरी, तोहिं राखेंगी शरण ॥१॥
जाकूँ श्याम उर हेर, राधे राधे राधे टेर ।
बाँसुरी में बेर बेर, करें नाम से रमण ॥२॥
भक्त प्रेमिन बखानी, जाकी महिमा रसखानी ।
मिले भीख मन मानी, कर प्यार से वरण ॥३॥
एरे मन मतवारे, छोड़ि दुनिया के द्वारे ।
राधा नाम के सहारे, सौंप जीवन मरण ॥४॥

वृषभानु की लली या सामलिया सौं नेहरा लगायकै चली ॥
अइयो रे अहीर के तू हमरी गली,
चंदन छिरकूँगी लाला तेरी पगड़ी ॥१॥
कोरी कोरी मटुकी दही दूध ते भरी,
रङ्गमहल में श्री राधे जू खड़ी ।
हाथन में गजरे गुलाब की छड़ी,
नेंक ठाढ़े रहियो लालजी मैं कबकी खड़ी ॥२॥
नैनन में कजरा मुख भरयौ पान,
वारी सी उमरिया राधे बड़ौ ही गुमान ।
वृन्दावन की कुञ्ज गलिन में रच्यौ है रास,
यह धुनि गाँवें स्वामी कान्हर दास ॥३॥

अकेली मत जइये राधे यमुना तीर ।
वंशी वट में ठग लागत है सुन्दर श्याम शरीर ॥
बिन फाँसी बिन भुजबल मारत बिन गाँसी बिन तीर ।
बाके रूप जाल में फँसिके को बचिहै ऐसो बीर ॥
घर बैठो भर देऊँ गगरिया मन में राखो धीर ।
बीर न पान करन हम त्यागो कालिन्दी कौ नीर ॥
धन सुत धाम गये नहिं चिन्ता प्राण गये नहिं पीर ।
सूरदास कुलकान गई ते धृग-धृग जन्म शरीर ॥

आज मेरे अँगना में आओ नन्दलाल, आवो गोपाल ।
दरशन की प्यासी गुजरिया श्याम ॥
अङ्गना में आवो मेरे माखन कूँ खावो ।
मीठी-मीठी बतियाँ सुनावो नन्दलाल ॥
अङ्ग पै झंगुलिया शीश पै लटुरिया ।
दूध की दंतुलिया दिखावो नन्दलाल ॥
रैन नहिं सोवे उठि भोर ही विलोवे दधि ।
गावें और ध्यावें तोही कूँ नन्दलाल ॥
कोरी-कोरी मटकी में धौरी-धौरी गईयन कौ ।
न्यारौ ही जमाय दही राख्यौ नन्दलाल ।
खावो ब्रजरानी को माखन नित्य-प्रति ।
आज प्रेम ते गरीबनी कौ खावो नन्दलाल ॥

आज ठाड़ौ री बिहारी यमुना तट पै ।
मति जैयो री अकेली कोई पनघट पै ॥
मुकुट लटक भृकुटी की मटक ।
मन गयो री अटक याकी पीरी पट पै ॥ आज०
नन्दजू को छौना देखि धीरज रह्यो ना ।
बीर ऐसो कछु टोना नटवर नट पै ॥ आज०
गुरुजन त्रास, कैसे बसें ब्रज बास ।
मन बन गयौ दास, घुँघरारी लट पै ॥ आज०
छुटी कुल लाज, गोपी आईं भाज-भाज ।
श्याम रसिया को राज आज बंशीवट पै ॥ आज०

झाँकी बनी विशाल बाँके गिरधर की ॥
सोहत मोर मुकुट अति नीको । चन्द्र छिपे रवि लागत फीको ।
गल बैजन्तीमाल ॥ बाँके गिरधर की ॥
बागौ लाल केशरिया पटका । तामें रसिकन का मन अटका ।
दूल्हा मदन गोपाल ॥ बाँके गिरधर की ॥
कनक कड़े किंकिणी नग वारी । बाँको छैल बन्यो गिरधारी ।
देखत भई निहाल ॥ बाँके गिरधर की ॥
कुंचित केश गुलाबी चीरा । नासा मणी चिबुक में हीरा ।
रसिया नन्द को लाल ॥ बांके गिरधर की ॥
श्याम संग राधा नव गोरी ! देव सुमन बरषै भरि झोरी ।
मुदित भई ब्रज बाल ॥ बाँके गिरधर की ॥

झूला झूलत बिहारी वृन्दावन में ।
कैसी छाई हरियाली आली कुञ्जन में ॥ टेक ॥
नन्द कौ बिहारी, इत भानु की दुलारी,
जोरी लगै अति प्यारी, बसी नयनन में ॥१॥
जमुना के कूल, पहिर सुरंग दुकूल,
तैसे फूल रहे फूल, इन कदमन में ॥२॥
गौर श्याम रंग, घन दामिन के संग,
भई अँखिया अपंग, छबि भरि मन में ॥३॥
राधा मुख ओर, नैन 'श्याम' के चकोर,
सखियन प्रेम डोर लगी चरनन में ॥४॥

वृन्दावन धाम अपार भजे जा राधे राधे ।
आई सामन की बहार बृज में छाई है हरियाली ॥
घनघोर घटा नभ छाई, पपिहा नें धूम मचाई ।
मन्दी मन्दी परैं फुहार । भजे जा राधे २ ॥१॥
फूलीं लता बेलि श्रीबन में, नाचैं मोर सघन कुञ्जन में ।
कोयल चढ़ी आम की डार । भजै जा राधे २ ॥२॥
बादर में दामिन दमकै, मोहन कौ पटुका चमकै ।
शीतल सुन्दर चलै बयार । भजैं जा राधे २ ॥३॥
झूला परयौ कदम की डारी, झूलैं श्रीराधा गिरधारी ।
झोटा दै रहीं सब बृजनार । भजैं जा राधे २ ॥४॥
लै रही हिलोरे जमना, जहाँ शोर करैं शुक मैंना ।
फूलन भ्रमर रहे गुञ्जार । भजैं जा राधे २ ॥५॥
तन हरे रंग की सारी, पहिरैं वृषभानु दुलारी ।
(किशोरी) गामें मधुर मल्हार । भजैं जा राधे २ ॥६॥

प्रबल प्रेम के पाले पड़कर, प्रभु को नियम बदलते देखा ।
उनका मान भले टल जावे, जन का मान न टलते देखा ॥
जिनकी केवल कृपा दृष्टि से, सकल सृष्टि को पलते देखा ।
उनको गोकुल के गोरस पर, सौ-सौ बार मचलते देखा ॥
जिनके चरण-कमल, कमला के करतल से, न निकलते देखा ।
उनको बृज करील कुञ्जों में, कंटक पथ पर चलते देखा ॥
जिनका ध्यान विरञ्चि शंभु, सनकादिक से न सँभलते देखा ।
उनको ग्वाल सखा-मंडल में, लेकर गेंद उछलते देखा ॥
जिनकी बङ्क भृकुटि के भय से, सागर सप्त उछलते देखा ।
उनको माँ यशोदा के भय से, अश्रु बिन्दु दृग ढलते देखा ॥१॥
सौंप दिए मन-प्राण तुम्हीं को, सौंप दिया ममता अभिमान ।
जब जैसे मन चाहे बरतो, अपनी वस्तु सर्वथा जान ॥
मत सकुचाओ मन की करते, सोचो नहीं दूसरी बात ।
मेरा कुछ भी रहा न अब तो, तुमको सब कुछ पूरा ज्ञात ॥
मान अमान दुःख-सुख से अब, मेरा रहा न कुछ सम्बन्ध ।
तुम्हीं एक कैवल्य मोक्ष हो, तुम ही केवल मेरे बन्ध ॥
रहूं कहीं, कैसे भी रहती, बसी तुम्हारे अन्दर नित्य ।
छुटे सभी अन्य आश्रय अब, मिटे सभी सम्बन्ध अनित्य ॥
एक तुम्हारे चरण-कमल में, हुआ विसर्जित सब संसार ।
रहे एक स्वामी बस तुमही, करो सदा स्वच्छन्द विहार ॥२॥

मांझ

कजरारी तेरी आँखों में क्या, भरा हुआ कुछ टोना है ।
तेरा तो हँसन औरों का मरन, अब जान हाथ से धोना है ।
क्या खूबी हुस्न बयान करूँ, यह सुन्दर स्याम सलौना है ।
श्याम सखी प्राण धन जीवन, ब्रज का एक खिलौना है ॥

क्या चाल शान अलबेली है, गजराज चले मस्ते-मस्ते ।
जो तेरी तरफ सहज देखा, अनमोल बिके सस्ते-सस्ते ।
क्या रूप माधुरी बरसत है सखि ! चले जात रस्ते-रस्ते ।
एरी सखी मनमोहन ने, मन छीन लिया हँसते-हँसते ॥

गौर-स्याम बदनारबिंद पर, जिसको वीर मचलते देखा ।
नैन बान मुसक्यान संग फँस, फिर नहिं नेक सँभलते देखा ।
ललितकिशोरी जुगल इश्क में, बहुतों का घर जलते देखा ।
डूबा प्रेमसिन्धु का कोई, हमने नहीं उछलते देखा ॥

देखो री यह नन्द का छोरा, बरछी मारे जाता है ।
बरछी सी तिरछी चितवन की, पैनी छुरी चलाता है ।
हमको घायल देख बेदरदी, मन्द-मन्द मुसकाता है ।
ललितकिशोरी जखम जिगर पर, नौनपुरी बुरकाता है ॥

श्री राधा

श्रीवृन्दाबन रज दरसावे सोई हितू हमारा है ।
राधामोहन छबी छकावे सोई प्रीतम प्यारा है ।
कालिंदी जल पान करावे सो उपकारी सारा है ।
ललितकिशोरी जुगल मिलावे सो अँखियों का तारा है ॥

॥ श्रीभक्ताभिलाषा ॥

इतना तो करना स्वामी, जब प्राण तन से निकले ।
गोविन्द नाम कहकर, मेरा प्राण तन से निकले ॥टेक॥
श्रीगंगा जी का तट हो, या जमुनाजी का बट हो ।
मेरा साँवरा निकट हो, फिर प्राण तन से निकले ॥
श्रीवृन्दावन का थल हो, मेरे मुख में तुलसी दल हो ।
विष्णु चरण का जल हो, फिर प्राण तन से निकले ॥
मेरा साँवरा खड़ा हो, वंशी का स्वर भरा हो ।
तिरछा चरण धरा हो, जब प्राण तन से निकले ॥
सिर सोहना मुकुट हो, मुखड़े पै काली लट हो ।
यही ध्यान मेरे घट हो, जब प्राण तन से निकले ॥
कानों जड़ाऊँ बाली, लट की लटें हों काली ।
देखूँ अदा निराली, जब प्राण तन से निकले ॥
केशर तिलक हो आला, मुखचन्द्र सा हो उजाला ।
डालूँ गले में माला, जब प्राण तन से निकले ॥
पचरंग काछनी हो, पट पीत में तनी हो ।
मेरी बात सब बनी हो, जब प्राण तन से निकले ॥
पीताम्बरी कसी हो, होठों में कुछ हँसी हो ।

छबि ये ही दिल बसी हो, जब प्राण तन से निकले ॥
सुध मुझको ना हो तन की, तैयारी हो गमन की ।
बृज बन की होवें लकड़ी, जब प्राण तन से निकले ॥
उस वक्त जल्दी आना, मुझको न भूल जाना ।
नुपुर की धुन सुनाना, जब प्राण तन से निकले ॥
जब कण्ठ प्राण आवे, कोई रोग ना सतावे ।
यम दर्श ना दिखावे, फिर प्राण तन से निकले ॥
मेरे निकले प्राण सुख से, तेरा नाम निकले मुख से ।
बच जाऊँ घोर दुख से, फिर प्राण तन से निकले ॥
ये नेक सी अरज है मानो तो क्या हरज है ।
ये ही दास की गरज है फिर प्राण तन से निकले ॥
इतना तो करना स्वामी जब प्राण तन से निकले ॥

॥ ब्रज के रसिया ॥

ए री अलबेलो छैल छबीलो ब्रज में बाँकेबिहारी लाल ।
बाँकेबिहारी लाल ब्रज में कुञ्ज बिहारी लाल ॥
एरी अलबेलो०
मोर मुकुट मकराकृत कुण्डल गल बैजन्ती माल ।
ठोड़ी पर तो हीरा सोहै नैना बने विशाल ॥
एरी अलबेलो०
पीताम्बर को जामा सोहै पटका लाल गुलाल ।
कमर कौंधनी हरि के सोहै नूपुर की झनकार ॥
एरी अलबेलो०
दूध भात को भोग लगत है राज भोग श्रृंगार ।
सैन भोग तो खूब लगत है बट जावै परसाद ॥
एरी अलबेलो०
निधिवन में हरि रास रचावै श्यामा प्यारी साथ ।
निधिवन तो श्रीबिहारीजी को सेवक है हरिदास ॥
एरी अलबेलो०

बाँकेबिहारी की बाँकी मरोर, चित लीन्हा है चोर ।
बाँके मुकुट बाँके कुण्डल विशाल
गल हार हीरा के मोतियन की माल
बाँके ही पटका के लटका की छोर चित लीन्हा है चोर ॥१॥
झंगुली जड़ाऊ जवाहरात की
बाँकी लकुटिया सजी हाथ की
बाँके पीताम्बर की झलके किनोर चित लीन्हा है चोर ॥२॥

कमलों से कोमल हैं बाँके चरन
हे श्याम सूरत मनोहर बरन
भक्तों की प्रीत जैसे चंदा चकोर चित लीन्हा है चोर ॥३॥
बाँकी है झाँकी और बाँकी अदा
भक्तों के कारज सुधारे सदा
ऐसे ही दीनों की सुनिए निहोर चित लीन्हा है चोर ॥४॥

तेरी भोरी सी सूरतिया मेरे मन गई है समाय ।
रे साँवलिया नन्दकिशोर ॥
मोर मुकुट कटि काछनि सोहे गल वैजन्ती माल,
कानन कुण्डल नासा मोती और घुँघराले बाल ।
तेरे नैना बड़े रसीले मेरे मन के चित चोर ॥१॥
एक दिन मिल गयो मोय डगर में, बरबस लई बुलाय,
कर बरजोरी मेरी बहियाँ मरोरी मन्द मन्द मुसकाय ।
माखन की मटकी फ़ोर के फिर हँसन लग्यो मुख मोर ॥२॥
लूट लूट दधि माखन खावे ग्वालन लेय बुलाय,
धाकिट-धुमकिट, धुमकिट-धाकिट नाचे मोय नचाय ।
तेरी बंशी नेक बजाय जा मैं विनय करूँ कर जोर ॥३॥
श्रीराधावल्लभ देखे बिना परे न मोकूँ चैन,
युगल छबि की झाँकी पाऊँ सुफल होय मेरे नैन ।
मैं वारी कुञ्जबिहारी तेरे चरन-कमल चित डोर ॥४॥

नेकु नाचि दै बिहारी मेरे अँगना में आय ।
हँसि मुरली बजाय देहु माखन खवाय ॥टेक॥
छोटो सौ गुपाल तारी दैहि ब्रज बाल ।
नाचौ नन्दजू के लाल दैहौं सगाई कराय ॥१॥
झूँठ कहै मैया कब लावैगी दुल्हैया ।
तेरी चारूँगो न गैया, कहूं नन्दजू सों जाय ॥२॥
छोटी एक गैया, मँगवाऊँगी कन्हैया ।
दूध पीयौ दोऊ भैया, तेरी चोटी बढ़ि जाय ॥३॥
गायबे बधाई कब आवैगी लुगाई ।
झट्ट करिदै सगाई, दीजौ दुलहा बनाय ॥४॥
बरना बनाऊं गात उबटि न्हवाऊँ ।
संग दाऊ कौ पठाऊँ, ब्याह लावैगो कराय ॥५॥
बलि को पठावै, नित्त मोही को खिजावै ।
'श्याम' ताहि न पत्यावै, देगौ हाऊ ते डराय ॥६॥

नाना भाँति नचायौ, भक्तन नै मोय ।
लोक लाज तजि इनहि काज मैंने बैकुण्ठहू बिसरायौ ॥टेक॥
गज ने पुकारयौ, तब गरुड़ बिसारयौ,
जाय ग्राह कूँ संहारयौ, सुनि प्रेम की पुकार ।
जब द्रौपदी बिचारी, बोली आओ गिरधारी,
मोहि आस है तिहारी, जाऊँ और काके द्वार ॥
सुनी टेर नहीं करी देर मैंने, तुरतहि चीर बढ़ायो ॥१॥
नरसी भगत काज सामलिया सेठ बन्यौ,

भात पहरायौ लाज राखी जन की ।
प्रह्लाद ने पुकारयौ नरसिंह रूप धारयौ,
हिरनकश्यप विदारयौ, सुधि भूल्यौ तन की ॥
छोड़ मिठाई दुर्योधन की साग बिदुर घर खायौ ॥२॥
भई ध्रुव कूँ गलानी, तजि दीनी रजधानी,
मेरी माया पहचानी, मोते मिल्यौ है बिहँसि ।
नामदेव ने बुलायौ, वाकौ छप्पर छ्बायौ,
भेष मोहिनी बनायौ, लियौ अमृत कलस ॥
देवन सुधा पिवाय प्रेम सों, दैत्यन सींग दिखायौ ॥३॥
कहूं शस्त्र मैं उठाऊँ रण छोड़ भाग जाऊँ,
परतिज्ञा हूं भुलाऊँ कहूं भीख मागूँ जाय ।
रूप बामन कौ धार, जाय पहुँच्यो बलि द्वार,
तीन पैंड में ही तीन लोक नाप लिए धाय ॥
महाभारत में अर्जुन के संग मैं सारथी कहायौ ॥४॥
मैं मीरा कौ गुपाल गिरधारी नन्दलाल,
और कंस हूं कौ काल दास तुलसी कौ राम ।
लक्ष्मी कौ भरतार सब वेदन कौ सार,
बन्यौ नन्द कौ कुमार, सूरदासजी कौ श्याम ॥
सोई वृषभानु किशोरी नै चरनन कौ दास बनायौ ॥५॥

श्री राधा

भक्तन कौ हितकारी मैं कृष्णमुरारी ।

भाव अधीन रहूं भक्तन के गिनू न नृपति भिखारी ॥टेक॥

तोता कूँ पढ़ाबे सों गणिका कूँ तार दियो,

कुंजर कूँ तार दियौ प्रेम की पुकार में ।

ध्रुव छत्र शीश दियो प्रह्लाद उबार लियो,

द्रोपदी ने बाँध लियो कच्चे चार तार में ।

बन-बन गाय चरावत डोलूँ ओढ़ि कमरिया कारी ॥

भक्तन को० ॥१॥

झूँठे बेर खाय जाऊँ चावल मुट्ठी कहाँ पाऊँ,

चक्र की चले तहाँ रथ कूँ चलाऊँ मैं ।

हुण्डी हूं चुकाऊँ हाथ गिरि ले उठाऊँ,

नंगे पाँव उठ धाऊँ सुनि प्रेम की पुकार ।

तोरूँ धनुष स्वयंवर रोपूँ नर ते बन जाऊँ नारी ॥

भक्तन को० ॥२॥

चरण कमल तजि कमला न जाय कहूँ,

ब्रज के करील काँटे मेरे मन भाये हैं ।

भानु की दुलारी जब मान करे प्यारी,

बन प्रेम को पुजारी लै चरन मनाऊँ मैं ।

जगत को नाथ ब्रजगोपिन अनाथ कियो प्रेमिन की बलिहारी ॥

भक्तन को० ॥३॥

कैसौ माँगे दान दही कौ, रोकै मारग गिरधारी ।
नित प्रति निकस गई चोरी ते, गोरी बरसाने वारी ॥
रोकै मत गैलि नयौ दानी भयौ छैल,
सुन नन्द के ठगैल तेरे लाज न रही ।
रही कुल की जो रीति और आपस की प्रीति,
ऐसी करै अन रीति नीति तोर क्यों दई ॥
दई उलटी चाल चलाय जाय नैक पूछौ मँहतारी ॥१॥
पूछूँ कहा माय दान लैंहुँगो चुकाय,
नाहिं सूधी बतराय इठलाय क्यों घनी ।
घनी देखी नई नार बनैं बड़े की कुमारि,
मोते कहै ठगवार लगै आप ठगनी ॥
ठग नैना तेरे चपल गुजरिया हिरदे की कारी ॥२॥
कारी जायौ राति याते कारौ भयौ गात,
दही चोर-चोर खात बात ऐंठ की करौ ।
करौ कंस को न डर रोकि राखी है डगर,
दऊँ गुलचा द्वै धर घर रोमते फिरौ ॥
फिरौ घर-घर माँगत छाछ छैल तुम कबके बलधारी ॥३॥
बल देखै कंस मेरौ वाहि मारूंगो सवेरो,
नाहिं फूफा लगै तेरौ रट वाही की लई ।
लई खूब समझाय रही बातन बनाय,
तोहि दैहुँगो नचाय जैसे दही में रई ॥
रईयत बाबा की बसैं तेरी सी सौ गोबरहारी ॥४॥
रईयत हमारी लाल अब बने भूमिपाल,

जोरि दस ग्वाल-बाल बाँकुरे भये ।
भये मथुरा में आप बंदि काटैं माई-बाप,
भानुपुर के प्रताप गाय चराइ ह्याँ रहे ।
रहे उलटी आँख दिखाय कमरिया ओढ़ लई कारी ॥५॥
कमरी हमारी तीन लोक तेऊ न्यारी,
तू तो जानै का गँवारी पावैं देवहु न पार ।
पार पायौ नाहिं शेष इन्द्र अज हू महेस,
मेरौ ग्वारिया कौ भेष देस प्रेम कौ प्रचार ॥
चट दऊँगो कंस पछार स्याम कामरि में गुन भारी ॥६॥

ग्वालिन करिदै मोल दही कौ, मोकूँ माखन तनिक चखाय ॥
सुन गोरी बरसाने वारी, नेक चखाय दै माखन प्यारी,
आज मान लै बात हमारी ।
मटुकी के दर्शन करवाय दै, क्यों राखी दुबकाय ॥१॥
नाँय तौ आज समझ ले मन में, काऊ दिन हाथ परैगी बन में,
सबरी कसक निकारूँ छिन में ।
लकुटी मारि फोरि दऊँ मटकी, लऊँगो दान चुकाय ॥२॥
साँच समझ लै नाहैं धोखौ, जा दिन मेरो लग जाय मौकौ,
दही तेरौ बिकवाय दऊँ चोखौ ।
चोरी करें आज तेरे घर में पहले दऊँ जताय ॥३॥
पनघट पै भरवे जाय पानी, मोय तेरी गागर लुढकानी,
यही हमारी रीति पुरानी ।
अबहूं समझि 'श्याम' समझावै, फिर पीछे पछताय ॥४॥

अपनो गाँव रखो नन्दरानी ! हम कहीं और बसेंगी जाय ॥टेक

तेरे लाला का गुण सुन री, कहूं तोय समझाय ।
देखन में लागे छोटो सो, हाल बड़ो हो जाय ॥१॥
सूनी बाखर खोल के साँकर, वह भीतर घुस जाय ।
छींका में ते माखन खावे, दूध दही ढरकाय ॥२॥
मैं जल-जमुना नहाने चाली, चीर चोर ले जाय ।
लेके चीर कदम पर बैठ्यो गूँठो रह्यौ दिखाय ॥३॥
एक दिना मोहन को पकड़यो, दुबक छिपक कर जाय ।
अपनो हाथ छुडाय गयो, देवर को कर पकडाय ॥४॥
चन्द्र सखी भज बालकृष्ण छबि लाला को लेओ समझाय ।
वृन्दावन की कुञ्ज गलिन में लूट लूट दधि खाय ॥५॥

ऐसौ प्यारौ लगै न कोई जैसौ प्यारौ मोय बृज धाम ।

लता-पता प्रिय वृन्दावन की, अति अद्भुत शोभा कुंजन की,
छाछ लगै प्रिय बृजगोपिन की ।
वृक्ष कदम्बन के झुके श्रीयमुना के तीर ।
नाचै मोर सुहामने बोलैं कोकिल कीर ॥
निर्मल नीर सरोवर सुन्दर भरे रहैं निशियाम ॥१॥
जन्मभूमि मधुपुरी हमारी, गोकुल मांहि पूतना मारी,
दाऊजी हल मूसर धारी ।
मानसरोवर बेलबन माँट और भाण्डीर ।
चीरघाट आगैं लखौ जहाँ हरे सखिन के चीर ॥
बंसीवट पै महारास स्थल अति ही अभिराम ॥२॥

गिरि गोवर्धन की बलिहारी, जाते नाम परयौ गिरधारी,
राधा कृष्ण कुण्ड छबि न्यारी ।
बरसानौ लखि प्रिया कौ है अनुपम स्थान ।
पीरी पोखर सांकरी खोर और गढ़ मान ॥
मोरकुटी गहवर बन बसिकैं भज लै राधा-नाम ॥३॥
शोभा देख आदि बद्री की, झाँकी करहु चन्द्रमाजी की,
चरण पहाड़ी है अति नीकी ।
मधुबन ताल कुमोद बन दोंमिल बहुला जान ।
द्वादस बन उपबन निरखि श्रीगोपेश्वर भगवान ॥
बट संकेत देख ता आगैं है मेरौ नन्द गाम ॥४॥
शुद्ध प्रेम मूरति बृज नारी, मीठी दैंय प्रेम की गारी,
ग्वाल नचामें दै-दै तारी ।
और धाम ऐश्वर्य मय तहाँ स्तुति गुन गान ।
यहाँ घर-घर चोरी करैं परब्रह्म भगवान ॥
ओढ़ि कमरिया गाय चराऊँ डोलूं नंगे पाम ॥५॥

पकरौ री ब्रजनारि कन्हैया होरी खेलन आयौ है ।
संग में अति उत्पाती ग्वाल, हाथ पिचकारी फेंट गुलाल,
नाच रहे ढप बजाय दै ताल ।
कमोरी रंगन की भरि लायौ है ॥१॥ पकरौ री बृजनार ०
लेऔ पिचकारी सबहि छिनाय, श्यामकूँ गोपी देऔ बनाय,
कंचुकी कटि लहँगा पहराय ।
करौ सबही अपने मनभायौ है ॥२॥ पकरौ री बृजनार०

एकहू ग्वाल जाय नहिं भाज, मलौ मुख ऊपर गोबर आज,
लाज कौ होरी में नहिं काज ।
बड़े भागिन ते फागुन आयौ है ॥३॥ पकरौ री बृजनार०
दई आज्ञा वृषभानुकुमार, है गईं सावधान बृजनार,
आय गये तबही कृष्णमुरार ।
हो हो होरी शब्द सुनायौ है ॥४॥ पकरौ री बृजनार०
फेंट ते लियौ गुलाल निकार, दियौ राधे के ऊपर डार,
सखीन के मौहड़े दिए बिगार ।
सखन नै हल्ला खूब मचायौ है ॥५॥ पकरौ री बृजनार०
उड़ायौ भर-भर मुट्ठी गुलाल, है गये धरती बादर लाल,
कूद रहे हो हो करकैं ग्वाल ।
दाव बृजगोपिन नै तब पायौ है ॥६॥ पकरौ री बृजनार०
भाजकैं मोहन पकरे जाय, गाल पै गुलचा दिए जमाय,
लई पिचकारी तुरत छिनाय ।
कन्हैया ब्रज गोपिका बनायौ है ॥७॥ पकरौ री बृजनार०
चतुरता सबरी दई भुलाय, सामरौ नैनन हा-हा खाय,
'किशोरी' रहीं मन्द मुसक्याय ।
नन्द कौ घूँघट मार नचायौ है ॥८॥ पकरौ री बृजनार०

श्री राधा

॥ पद ॥

धनि धनि राधिका के चरन ।
सुभग सीतल अति सुकोमल कमल के से वरन ॥
रसिकलाल मन मोदकारी बिरह सागर तरन ।
दास परमानन्द छिन-छिन स्याम जिनकी सरन ॥

चाँपत चरन मोहनलाल ।
कुँवरि राधे पलंग पौढ़ीं, सुन्दरी नव बाल ॥
कबहुँ कर गहि नैन लावत, कबहुँ छुवावत भाल ।
नन्ददास प्रभु छबि बिलोकत प्रीति के प्रतिपाल ॥

लगन नहीं छूटै एरी बीर ।
ताने देहु भले नाम धरो चाहे कोटि करो तदबीर ॥
छिन में करत चतुर को बौरा नृप को करत फ़क़ीर ।
नारायण अब कठिन है बचबो विंध हिये दृग तीर ॥

बसौं मेरे नयनन में नन्दलाल ।
साँवरी सूरत माधुरी मूरत राजिव नयन विशाल ॥
मोरमुकुट मकराकृत कुण्डल अरुण तिलक दिए भाल ।
अधरन बंशी कर में लकुटी कौस्तुभमणि बनमाल ॥
बाजूबन्द आभूषण सुन्दर नूपुर शब्द रसाल ।
दास गोपाल मदनमोहन प्रिय भक्तन के प्रतिपाल ॥

लटकत आवत कुञ्ज भवन ते ।
ढुर-ढुर परत राधिका ऊपर जाग्रत शिथिल गवन ते ॥
चौंक परत कबहूँ मारग बिच चलत सुगंध पवन ते ।
भर उसास राधा वियोग भय सकुचे दिवस रवन ते ॥
आलस मिस न्यारे न होत हैं नेकहूँ प्यारी तन ते ।
रसिक टरो जिन दशा श्याम की कबहू मेरे मन ते ॥

मुकुट पर वारी जाऊँ नागर नन्दा ।
सब देवन में कृष्ण बड़े हैं ज्यों तारों में चन्दा ॥
सब सखियन में राधेजी बड़ी हैं ज्यों नदियों में गंगा ।
चन्द्रसखि भज बालकृष्ण छबि काटो यम के फन्दा ॥

श्रीराधे दे डारो ना बाँसुरी मोरी ।
जा वंशी में मेरे प्राण बसत हैं सो वंशी गई चोरी ॥
सोने की नाहीं कान्हा रूपे की नाहीं हरे-हरे बाँस की पोरी ।
काहे से गाऊँ राधे काहे से बजाऊँ काहे से लाऊँ गउआँ घेरी ॥
मुख से गाओ प्यारे ताल से बजाओ लकुटी से लाओ गैयाँ घेरी ।
चन्द्रसखी भज बालकृष्ण छबि हरि चरणन की चेरी ॥

॥ श्रीगोविन्दाराधन ॥

श्रीकृष्ण गोविन्द हरे मुरारे, हे नाथ नारायण वासुदेव ।
गोविन्द मेरी यह प्रार्थना है,
भूलूं न मैं नाम कभी तुम्हारा ।
निष्काम होके दिन-रात गाऊँ,
गोविन्द ! दामोदर ! माधवेति ॥ १ ॥

देहान्तकाले तुम सामने हो,
वंशी बजाते मन को लुभाते ।
गाता यही मैं तन नाथ त्यागूँ,
गोविन्द ! दामोदर ! माधवेति ॥२॥
धन्या सभी हैं ब्रजगोपिकाएं,
गाती सदा जो हरिनाम प्यारा ।
गो दोहते भी यह गीत गाती,
गोविन्द ! दामोदर ! माधवेति ॥३॥
गोपी दही छाछ बिलो रही है,
मीठा करे शब्द बड़ा मथानी ।
गाती मथानी संग नारी सारी,
गोविन्द ! दामोदर ! माधवेति ॥४॥
डाली मथानी दधि में किसी ने,
है ध्यान आया दधि चोर का ही ।
गद्-गद् हुआ कण्ठ पुकारती है,
गोविन्द ! दामोदर ! माधवेति ॥५॥
प्यारे ! जरा तो मन में विचारो,
क्या साथ लाये अरु ले चलोगे ।
जावे यही साथ सदा पुकारो,
गोविन्द ! दामोदर ! माधवेति ॥६॥
नारी धरा-धाम सुपुत्र प्यारे,
सन्मित्र सद् बान्धव द्रव्य सारे ।
कोई न साथी हरि को पुकारो,
गोविन्द ! दामोदर ! माधवेति ॥७॥
नाता भला क्या जग से हमारा,

आये यहाँ क्यों ! कर क्या रहे हो ?
सोचो बिचारो हरि को पुकारो,
गोविन्द ! दामोदर ! माधवेति ॥८॥
सच्चे सखा हैं हरि ही हमारे,
माता-पिता-स्वामी-सुबन्धु प्यारे ।
भूलो न भाई दिन-रात गावो,
गोविन्द ! दामोदर ! माधवेति ॥९॥
गोविन्द दामोदर माधवेति,
हे कृष्ण हे यादव हे सखेति ।
श्रीकृष्ण गोबिन्द हरे मुरारे,
हे नाथ नारायण वासुदेव ॥१०॥

संकट हरैगी करेगी भली वृषभान की लली ।

तेरे भक्तों को भारी भरोसा रहे, जो आवै शरण वाकी बैंया गहै,
दुष्टों के दल में करै खलबली ॥ वृषभान की लली ...
राधा श्रीराधा श्रीराधा रटैं, राधा रटैं कोटि व्याधा मिटैं,
प्यारी जो लागे रंगीली गली ॥ वृषभान की लली ...
त्रिभुवन पती अपने बस में किये, जहाँ पग धरे श्याम नैना धरे,
छलिया ने बहु रूप धर-धर छली ॥ वृषभान की लली ...
बरसाने वारी तू मेरी सहाय, दीनन दया नेक दरश तो दिखाय,
राधा तपस्या करी जो फली ॥ वृषभान की लली ...

स्वामी कृष्णचन्द्र भगवान कुमर रानी यशुधा के हैं ।

लियौ प्रभु मथुरा में अवतार,
खुल गये तारे बज्र किवार,
चले वसुदेव शोध पै धार,
जमुना हट गयी चरण पखार,
ब्रज में है रहे जै जैकार,
है रहे जै जैकार पुत्र भये नन्द बाबा के हैं ।
जन्म सुन गयौ कंस घबड़ाय,
पूतना लीनी तुरत बुलाय,
कही वाय खूब तरह समुझाय,
कुचन ते जइयौ जहर लगाय,
दोहा - गोकुल पहुँची जाय कै नंदरानी के द्वार ।
पलना में ते कृष्ण कूँ लीनौ गोद उठाय ॥
जहर भरे दोऊ कुचन श्याम ने किये सुधा के हैं ।
जतन कर गयौ कंस मन हार,
न बस में आये कृष्ण मुरार,
वृज में नित नये करत विहार,
दोहा - नित नये करत विहार ब्रज प्रभु चढ़ै कदम की डार ।
आमें राक्षस कपट धर क्षण में डारें मार ॥

अका बका वत्सासुर मारे पइया सकटा के हैं ।
बसें मथुरा में केशवचन्द,
करें दर्शन होवे आनन्द,
काट दैं जनम-जन्म के फन्द ।
दोहा – केशवचन्द गुपाल के नित उठ दर्शन जाँय ।
महिमा याके जनम की कों कवि करे बखान ॥
कहते घासीराम कृष्ण मरवैया कंस के हैं ॥

पाँड़े पूछ रह्यौ ग्वालन ते भैया कहाँ नंद कौ द्वार ।
सुनत मनसुखा आगे आये,
कह बाबा तू कहाँ ते आयौ,
गाँव नाम द्विज ने बतलाये,
जशुधा जी से मिलवे आये,
सुनी टेर नंदरानीजी ने निकस के आयीं बाहर ॥ पाँड़े पूछ रह्यौ ...
हाथ जोर चरनन सिर नाई,
आसन चौकी दियौ बिछाई,
पीहर की पूछी कुसलाई,
राजी ख़ुशी भावी भौजाई,
द्विज ने कही सुखी सब तेरे सकल कुटुम परिवार ॥ पाँड़े पूछ रह्यौ .

भोजन कूँ सामान मँगाऊँ,
खीर पकाओ तो दूध कढाऊँ,
जो रुचि होय सोई बनवाऊँ,
जब तक तुम स्नान करोगे तब तक सब तैयार ॥ पाँड़े पूछ रह्यौ ...
बुला मंसुखा संग में कीनौ,
नहावे कूँ पाँड़े चल दीनौ,
जमुना में धसि गोता लीनौ,
पहरे वस्त्र रवि है जल दीनौ,
संध्या तर्पण पूजा करवै में है गई अवार ॥ पाँड़े पूछ रह्यौ ...
खैंच लकीर चौका की आड़ी,
दूध पाक की धर दई हाँड़ी,
धुँआ लग्यौ आसन में भारी,
ढोक देंत में जर गई दाड़ी,
बन्दर की रखवारी करियौ है कैं खूब हुशियार ॥ पाँड़े पूछ रह्यौ ...
भई रसोई थार सजायो,
आरोगो क्यों विलम लगायो,
मारन लगे सपट्टा प्रभु जी, गिरधर नन्दकुमार । पाँड़े पूछ रह्यौ ...
द्विज देखे नैन उघारी,
भोजन कर रहे कृष्णमुरारी,

देख रही यशुधा महितारी,
भाँग खाय द्विज भयौ बावरो कर रही सोच विचार । पाँड़े पूछ रह्यौ
जब पाँड़े कूँ गुस्सा आयौ,
नदरानी से बचन सुनायौ,
चौका में घुस लाला आयौ,
झूँठौ कियौ पेट भर खायौ,
दिन भर पच्यौ रसोई कीनी सो सब दई बिगार ॥ पाँड़े पूछ रह्यौ ...

छन्द – जशुधा ने पकरे कुमर जू मन में बहुत दुःख पायकें ।
लैकें लकुट कहिवे लगी नन्दलाल कूँ समुझाय कें ॥
माखन व मिसरी खायकें खेलवे कूँ तू गयौ ।
झूँठौ कियौ चौका बिगारो विप्र के संग छल भयौ ॥
भूके रहे द्विज देवता यह बड़ौ भारी पाप है ।
आफत में आफत आ पड़ी है देन कही वह श्राप है ॥
यह सुन वचन नन्दलाल कहै मैया क्यों होत उदास है ।
तेरौ कन्हैया लाढ़िलौ भक्त कौ नित दास है ॥
भक्त मेरौ नाम लैं मोकूँ रटै हैं निस दिना ।
मोय कल पड़े ना वा भक्त के देखे बिना ॥
यह सुन वचन नंदलाल के ज्ञान पाँड़े कूँ भयौ ।
धन्य है प्रभु धन्य है और लौट आँगन में गयौ ॥

आँगन में डोलै लुढकतो मन में बहुत सुख पाय कें ।
जो चूक प्रभु मोसों भई दीजौ सभी बिसराय कें ॥
अति विचित्र मैया वस्त्र मँगाये,
पाँड़े को भोजन करवाये,
दई दक्षिणा विदा कराये,
आशीर्वाद देंय द्विज मुख ते भरे रहैं भण्डार ॥ पाँड़े पूछ रह्यौ ...

ऐसी कृपा करौ नंदलाल सदाँ हम बृज में करें निवास ।
भूख लगे भिक्षा कर लाऊँ,
बृजवासिन के टुकड़ा पाऊँ,
स्वर्गलोक वैकुंठ न जाऊँ नाय बसूँ कैलास ।
पावन सरोवर नित प्रति नहाऊँ,
नन्द बबा के दर्शन पाऊँ,
बैठ लतान में ध्यान लगाऊँ करूँ नाम विश्वास ।
मधुमंगल बोलै छकिहारी,
तहाँ आवैं सब गोपकुमारी,
टेर कदम में गाय चरावैं कृष्ण हमारे साथ ।
तुलसी माला मन्त्र धराऊँ,
रचि पचि कें श्रृंगार बनाऊँ,
बिनती करूँ यही वर माँगूं जुगल चरण की आस ।

निर्मल जमुना जल करवे को प्रभु ने नाथ्यो कालीनाग ।
ग्वालबाल सब सखा बुलाये,
नाना भाँतिन खेल मचाये,
गेंद में मार्‌यौ टोल घुमाय,
उछट जमुना में पहुँची जाय,
सखा श्रीदामा गयो रिसाय,
मेरी तो वही गेंद दै लाय,
दोहा - श्रीदामा ने फैंट गह कही कृष्ण समझाय ।
जमुना में ते जाय कें वही गेंद दै लाय ॥
यों मत जाने बिना गेंद लिए घर कूँ जाऊँगो भाग ।
छोड़ फेंट श्रीदामा मेरी,
घर चल गेंद दिवाय दऊँ तेरी,
कही यों श्रीदामा झुझलाय,
मेरी तो वही गेंद दै लाय,
खड़ो क्यों बातें रह्यो बनाय,
मेरी तो वही गेंद दै लाय,
दोहा - इतनीं सुनकें कृष्ण ने नटवर भेष बनाय ।
लै भैया मैं जात हूँ घर मत कहियों जाय ॥
ठाड़े रहियों जमुना तट पै मत जइयों मोय त्याग ।
दह में कूदे कृष्ण मुरारी,

सोवै नाग सहस्त्र फन धारी
कही यों नागिन ने समझाय,
गयो तू बालक कहाँ से आय,
खबर मेरे पति कूँ पर जाय,
छन्द - आयौ कहाँ ते जाय कहाँ यह भेद मोय बताइयाँ ।
कहा नाम है कहा गाँम है किन मात तोकूँ जाइयाँ ॥
बोले हैं बोल कुबोल तोते कै घर नार रिसाइयाँ ।
डस जाइगो जागत नाग जातै जा बगद घर जाइयाँ ॥
दोहा - जारे बालक बगद कें मैं समझाऊँ तोय ।
सूरत तेरी देख कें दया लगत है मोय ॥
जो डस जाइगो नाग तेरे कुल को बुझ जाय चिराग ।
कृष्ण चन्द्र कह नागिन प्यारी,
जगा नाग अपनौ बलधारी,
नाग कूँ क्यों न देय जगाय,
रही याके ऊपर गरमाय,
खड़ी क्यों बातें रहीं बनाय,
कहा धमकी-सी रही दिखाय,
छन्द- देश पूरब गाँव गोकुल नाम मम नंदलाल है ।
बालक मती जाने मुझे तेरे नाग कौ अति काल है ॥
बोले न बोल कुबोल मोते न लड़ी घर बाल है ।

झूलैं हिडोले राधिका तेरे नाग डोरी डार है ॥
दोहा - डोरी डारूँ नाग की वृन्दावन के माहिं ।
झूलै रानी राधिका अब भजवै को नाहिं ॥
अब भजवै को नाँय भजूँ तो कुल कूँ लग जाय दाग ।
नागिन ने जब नाग जगायो,
मारी फुंकार क्रोध कर धायौ,
लपेटा तन में दै लीनौ,
कृष्ण कूँ उछरन नाहिं दीनो,
सोच उत ग्वालबाल कीनो,
दोहा - ग्वालबाल दौड़े गये नन्दबबा के द्वार ।
तेरो बालक साँवरो दह में कूद्यौ जाय ॥
कहा सोवे सुख नींद रे बाबा जाग जाग रे जाग ।
नन्द यशोदा रोमन लागे,
गोकुल तज जमुनाजी को भागे,
सकल बृज छाय रह्यो जमुना तीर,
सबन के बहैत द्रगन सों नीर,
कृष्ण बिन बँधे न दिल कूँ धीर,
दोहा - नन्द बबा कूदै परें ग्वाल रहे समुझाय ।
इतमें अपनी कृष्ण ने दीनी देह बढ़ाय ॥
खुलन लपेटा लगे वदन के उठन लगे जल झाग ।

नाग नाथ जल ऊपर आये,
कमल पुष्प कंसा कूँ लाये,
दरस ब्रजवासीन कूँ दीनो,
निरत फन-फन ऊपर कीनो,
देख नागिन दुर्लभ जीनो,
दोहा - दुरलभ जीनों देख कें
अस्तुति करी बनाय ।
प्राणदान याहि दीजिये, छमा करो अपराध ॥
क्षमा करौ अपराध पती कौ बकसौ मेरो सुहाग ।
कृष्णचन्द्र नागिन समुझाई,
ब्रज तज अंत बसौं कहुँ जाई,
नाग कहै सुनौ गरीबन निवाज,
ब्रज तज कहाँ कूँ जाऊँ भाज,
गरुड़ ते बैर पर्‌यौ महाराज,
दोहा – गरुड़ वैर तोते तज्यो निरभय जाओ देश ।
चरण चिन्ह मेरौ बन्यौ मिट गये सकल कलेश ॥
राधेश्याम देवतन के मन बढ़्यौ अधिक अनुराग ।

श्री राधा

ब्राह्मण बनकें कृष्णमुरार पधारे बलि राजा के द्वार ।
बने वामन अंगुल भगवान,
रूप कूँ देख छिपे हैं भान,
लग्यौ माला ते जिनको ध्यान,
दोहा - चरण खडाऊँ पहरि के लकुटी लै लई हाथ ।
गीता पुस्तक बगल में पर्‌यौ जनेऊ गात ॥
दरबानी ते कही खबर तुम करो भूप दरबार ।
कचहरी जाय पहुँच्यौ दरबान,
अरज कर कीनौ सकल बियान,
विप्र एक आयौ चतुर सुजान,
दोहा - चले छोड़ दरबार को भूप हिये हरषाय ।
दर्शन करके विप्र के परे चरण में जाय ॥
जो माँगो सो दऊँ नाथ कछु मुख ते करो उचार ।
दूर ते सुन कें आयो तोय,
भूमि एक तीन पैड़ दै मोय,
लऊँ ठाकुर की रसोई पोय,
दोहा - तीन पैड़ की कहा चले प्रभु लीजै साढ़े तीन ।
गंगा जल झाड़ी मँगा बुला गुरु जी लीन ॥
देख विप्र की ओर भूप ते बोले शुकराचार्य ।

पर्‌यौ अब कैं छलिया के फंद,
छल्यौ जाने राजा हरिचंद,
बिके रानी राजा फरजन्द,
दोहा - दान जमी कौ मत करै राजन मेरी मान ।
बलि राजा कहने लगे गुरु वचन न लौटे जायँ ॥
गये झाड़ी में बैठ गुरुजी ने रोक लई जलधार ।
राजा याहै मत दे दान जमी को,
याही ने हरिनाकुश मार्‌यो बन गयौ सिंह वनी कौ,
याही ने वृन्दा छल लीनी धर के रूप पती कौ,
याही ने हरिश्चन्द छल्यौ है भरो नीर भंगी को,
प्रभु ने जान लियौ वह चोर कुशा से दियौ नेत्र एक फोर ।
भूप संकल्प कियौ कर जोर,
दोहा- तीन पैड़ में सब लियो आधौ देओ दयाल ।
आधे में ओधे नपे बलि भेज दिए पाताल ॥
द्विज घासी कथ कहै बने प्रभु आप ही पहरेदार ।

मेरौ निज वृन्दावन धाम लगे मोय जग ते प्यारौ है ।
जग पूजै मोय शीश नवावै,
यहाँ गोपी मोय नाच नचावें,
योगीन ते दुर्लभ गति पावें,
दोहा - यहाँ यशोदा माय पै स्वयं बँधाऊँ हाथ ।
वहाँ जग कौ पालन करूँ यहाँ चोरी कर दधि खात ॥
चक्र सुदर्शन छाँड बन गयौ वंशी वारौ है ॥
वृत कर गोपी जमुना नहावें,
रवि गिरजा कूँ रोज वनामें,
मिलैं कृष्णपति यह वर पावैं,
दोहा - सिन्धुसुता जो लक्ष्मी ताकौ मैं भरतार ।
वाही कूँ माँगें जगत भगत भये बलिहार ॥
बृजजन साहूकार भिकारी जगत विचारौ है ।
जाहि नेत कहि वेद पुकारें,
ज्ञानी ध्यानी खोजत हारे,
सो यशुधा के खेलत द्वारे,
दोहा - शिव ब्रह्मा नहीं कर सके बृज से जग की तोल ।
जग माँगे धन लक्ष्मी बृज दे प्रेम अमोल ॥
याही ते बृज जगत भगत में अन्तर भारौ है ॥

इनके व्यंजन मोय न भावें,
नार बेच कें हलुआ खावें,
यहाँ टेंटीन को भोग लगावें,
दोहा - बेझर की रोटी मिले प्रेम भरी फटकार ।
देह धरे को फल मिल्यौ सुफल भयौ अवतार ॥
साल दुशाला छोड़ श्याम रुच्यौ कम्बल कारौ है ।

जीवन मूर अनूठी मत जानै झूँठी, अमर अनूठी रसिकन ।
घूँटी नाम श्याम रस बूँटी ।
बूँटी धर लाय, श्रद्धा शिल पै धराय,
लोढ़ी लगन बनाय, युक्ति जल में छनाय,
नाय गुरु कृपा पाय, बढ़ै चौगुनौ आनन्द,
मन पीकैं ह्वै स्वच्छन्द, ऐसी दऊँगी पिवाय,
पी शिव शुक सनकादिक अलख भये फिर जग पलकन खूटी ॥१॥
शेष शारदादि ध्रुव भक्त औ प्रह्लाद,
जान्यौं नारद ने स्वाद बने बावरे विहँस,
हँस पीगौ अम्बरीस व्यास आदि जो मुनीश,
गज गीध भालु कीश लियौ सबरी ने रस,
रस पावन भई बसि वृन्दावन पी गई गोप वधूटी ॥२॥
वधू परिवार झूँठौ माया कौ जंजार,

यामें फँसे जो गँवार जाकी बुद्धि है न थिर ।
थिर धन हूं तौ नाँय, क्षण आवै और जाय,
रही माया ही नचाय, जीव लट्टू रह्यौ फिर ।
फिर-फिर गिरै मरै नाँचै पर माया डोर न छूटी ॥३॥
छोटी-सी उमर, नदी तीर कौ सौ तरु
बढ़ै दिये की सी झर तेल आयु रह्यौ नसिं,
नचै वाही पै पतंग, जारै डारै निज अंग
मूढ़ बन्दर कौ ढंग लोभ बस गयौ फँस ।
फस्यौ दोऊ कर निकसत नाहीं माया मूंठी न खूटी ॥४॥
खोटी तिकड़म कीर्ति कामनी कंचन
तीन्यों नाश के साधन देय स्वर्ग ते हू डार ।
डारे गालव त्रशंकु यही चंद कौ कलंक,
मार्‌यौ रावण निशंक, लंक दीनी है पजार,
पजरी लंक बंक ह्वै सीता बनि गई आग अटूटी ॥५॥
टूटी काहे आस, मन होय क्यों उदास
चल रसिकन पास, सब होय नां छदाम,
दाम बिन देय प्याय जाते मस्त है जाय,
जग सुधि कूँ बिसराय कें भरैगो रंग श्याम,
श्यामभक्ति बूँटी के आगे और सब लागै झूँठी ॥६॥

श्री राधा

चंचल चपल चतुर चन्द्रावलि चालै चटक मटक की चाल ।

चन्द्रावलि दधि बेचन चाली,
घेरी गैल छैल बनवारी,
दान दधि जोवन देओ चुकाय,
दहेड़ी को नैक दही चखाय,
कहै यह चन्द्रावलि मुसकाय,

दोहा - जो कान्हा पालैं पड़े लाओ पत्तुआ तोर ।
छोड़ मंसुखा को गये मोहन माखन चोर ॥

चन्द्रावलि गई सटक मार मनसुख के गुलचा गाल ।
पत्ता तोर श्याम जब आये,
मनसुखलाल सोमते पाये,
न देखी चन्द्रावलि बृजनारि,
करन लागे मन सोच बिचार,
खिरक में जाय सोये मन मार,

दोहा – ढूँढत-ढूँढत डोलती घर-घर जसुमति माय ।
मेरौ वारौ कान्ह कित गयौ सो कोऊ देउ बताय ॥

कहै मनसुखालाल खिरक में सोय रहे नन्दलाल ।
टेरत मात श्याम नाँय बोले,
क्यों लाला टूटे पर्‌यौ झटौले,
कि तोकूँ कौनें दीनी गार,

कि तोकूँ आवत ताव बुखार,
बताय दे मेरे प्राण अधार,
दोहा - ना काऊ गारी दई ताव न आवत मोय ।
छल करि गई चन्द्रावलि कहा बताऊँ तोय ॥
अपने लाल कों चार विहाय दऊँ घर चल मदन गुपाल ।
समुद्र बहाऊँ मैया चार बहोरियाँ,
मेरे मन बसी चन्द्रावलि गुजरिया,
कहै माता निक मो ढिंग आओ,
तोय छल गई तू वाय छल लाओ,
चल्यौ तू रीठौरे कूँ जाओ,
दोहा- इतनी सुनकें श्याम ने सखी भेस लियौ धार ।
लँहिगा फरिया पहरकैं कर सोलह सृंगार ॥
चलत कमर बलखाय बन गये नई नौरंगी बाल ।
तुरत श्याम बन गये जनाने,
जशुधा ने प्रभु नाहिं पहिचाने
उराहनौ दैन गयौ घनश्याम,
साँमरी सखी बतायौ नाम,
तुम्हारो छोड़ जायेंगी गाँव,
दोहा - जशुधा ने पहिचान कैं लीने कंठ लगाय ।
माता आज्ञा पाय के रीठौरे गये आय ॥

चन्द्रावलि कौ घर पूछत सखियन ते दीनदयाल ॥५॥
चन्द्रावलि के घर यही तो डगरिया,
ऊँची-सी अटरिया याकी लाल किवरिया,
पहुँच गये चन्द्रावलि के द्वार,
खोल बहिना नेंक झँझन किवार,
द्वार पै कब की रही हूँ पुकार,
दोहा - चन्द्रावलि कहिबे लगी सुनौ सखी सुकमार ।
कहाँ ते आई नाम कहा सो मुख ते उच्चार ॥
कहा लगै नाते में आली कह दै साचौं हाल ।
चन्द्रावलि सुन साँचै बैना,
पीहर ते आई हूँ लगूँ तेरी बहिना,
कहै यों चन्द्रावलि समुझाय,
खिलाई गोद न जन्मी माय,
कहाँ ते बहिन गई तू आय,
दोहा - चन्द्रावलि ते साँमरी सखी लगी यों कहैन ।
मामा फूफी की दोऊ हम तुम लोग बहैन ॥
ब्याह तेरे में मोय सासरे भेज दई तत्काल ।
मिलत बहिन दोऊ भुजा पसारी,
चन्द्रावलि ने गिरा उचारी,
कहत में लागै लाज बानी,

लागै तेरी छाती मरदानी,
साँमरी सखी कहै स्यानी,
दोहा - तेरौ बहिना निश दिना करती रहती सोच ।
सोच करत में है गई छाती मेरी पोच ॥
तेरे देखे बिना बहिन मैंने पाये दुःख कराल ।
चल री बहिन दोऊ पानी भर लावैं,
दोनूँ बहिन पानी कूँ जावैं,
अचंभौ भयौ सखी मोय आज,
कहत में आवै मोकूँ लाज,
मरदई चाल चलै तू भाज,
दोहा - बालापन में बछरुआ घेर चराई गाय ।
वही टेव मोय पर रही सुन बहिना चित लाय ॥
चाल मेरी मरदानी पै तू मत करियौ कछु ख्याल ।
चल री बहिन तोय उबट न्हवाऊँ,
विविध सुगन्धित इत्र लगाऊँ,
साँवरी सखी जोर कहि हाथ,
मेरे घर सेड शीतला मात,
सुनी बुड़िया पुरान में बात,
दोहा - जो बहिना न्हाओ नहीं भोजन करौ अघाय ।
सखी साँवरी प्रेम ते बड़े-बड़े ग्रासन खाय ॥

खीर खाँड़ पकवान मिठाई छकै अनेकन माल ।
कहत-सुनत मोय सरम लगत है,
मरदाने तू कौर भरत है,
साँमरी सखी करै अरदास,
मेरे घर में लड़हारी सास,
देर जो कर देय दुःख त्रास,
दोहा - भोजन कर बीड़ी दई अब है आई रैन ।
पचरँग पलँग बिछाय कै करौ सेज सुख चैन ॥
चरन पलोटत में पिड़ुरीन की लगै खरदरी खाल ।
तेरे री बृज कौ लोग ठठौरा,
कहा बूढ़ौ कहा ज्वान छछोरा ।
बताय दई ऊबट मोकूँ बाट,
जहाँ काँटे करील के ठाट,
छिली पिड़ुरी पाँव गयो फाट,
दोहा - साल श्रृंगार उतार के, पीताम्बर लीयौ धार ।
चन्द्रावलि चकित भई, करन लगी बलिहार ॥
मैं तो लाला जबही जान गई पर्‌यौ लखाइ जाल ।
कौ तेरी बहिन कौन तेरौ बीरा,
तू गूजर हम जाति अहीरा
तनक दधि कूँ छलि आई मोय,

छली जा कारन मैंने तोय,
परस्पर बद्लौ जग में होय,
दोहा - चन्द्रावलि लीला करी प्रेम भरी घनश्याम ।
गोवरधन दस विसे में, छीतर घासीराम ॥
छीतर 'घासीराम' जुगल छबि निरखत भये निहाल ।

कैसे आवों हो कन्हैया तेरी बृजनगरी, गोकुल नगरी ।
इत मथुरा उत गोकुल नगरी, बीच बहै जमुना गहरी ॥
पाँव धरौं मेरी पायल भीजै, कूदि परौं बह जाऊँ सगरी ।
मैं दधि बेचन जात वृन्दावन, मारग में मोहन झगरी ॥
बरजो जसोदा अपने लाल कौं, छीन लई है मेरी नथ री ।
रहु रहु ग्वालिन झूँठ न बोलो, कान्ह अकेलो तुम सगरी ॥
हमरौ कन्हैया पाँच बरस कौ, तुम ग्वालिन अलमस्त भई ।
जाय पुकारें कंस राजा से, न्याव नहीं मथुरा नगरी ॥
वृन्दावन की कुञ्ज गलीन में, बाँह पकरि राधे झगरी ।
'मीरा' के प्रभु गिरधर नागर, साधु संग करि हम सुधरी ॥

कोई कहियो रे हरि आवन की, आवन की मन भावन की ।
आप न आवै लिख नहीं भेजै, बान पड़ी है ललचावन की ।
ए दोऊ नैन कह्यौ नहीं मानैं, नदिया बहै जैसे सावन की ।
कहा करूँ कछु बस नहीं मेरौ, पाँख नहीं उड़ जावन की ।
'मीरा' कहि प्रभु कब रे मिलोगे, चेरी भई हूँ तेरे दामन की ॥

मिलता जाज्यो हो गुरु ज्ञानी, थारी सूरत देख लुभानी ।
मेरौ नाम बूझि तुम लीज्यौ, मैं हूँ विरह दिवानी ।
रात दिवस कल नाहिं परत है, जैसे मीन बिन पानी ।
दरस बिना मोय कछु न सुहावै, तलफ-तलफ मर जानी ।
'मीरा' तौ चरणन की चेरी, सुन लीजै सुख दानी ॥

मुकुट पर वारी जाऊँ, नागर नंदा ।
वनस्पतिन में तुलसी बड़ी हैं, नदियन में बड़ी गंगा ।
सब देवन में शिवजी बड़े हैं, तारन में बड़ा चन्दा ॥
सब भगतन में भरतजी बड़े हैं, शरण राखो गोविन्दा ।
'मीरा' के प्रभु गिरधर नागर, चरणकमल चित फंदा ॥

कृष्णपिया मोरी रंग दे चुनरिया ।
नन्दलाल मोरी रंग दे चुनरिया ।
आप रँगो चाहे मोय रँगा दो, प्रेम नगर की खुली है बजरिया ॥
ऐसौ 'रंग' रँग जो, धोबी धोये चाहे सारी उमरिया ।
गई रे महीना, वार ते वारे आधी उड़रयो चाहे सारी उमरिया ॥

श्री राधा

मनमोहन प्रान प्यारे, टुक गली हमारी ओर ।
तेरी खूबी के देखन को, दिल तरसता महारे ॥
तेरी जुलफैं, मन की कुलफैं, मुसकान में अदा रे ।
सुन्दर सलौने मुख पर, कोटि काम वारि डारे ॥
स्वाँति बूँद ज्यों रटै पपीहा, निस दिन यहै गति मेरी ।
छिन पल, परै नहीं कल, मुझे आस लागी तेरी ॥
सब दिल की तू ही जानै, कहिए सो अब कहा रे ।
जिसकी लगन है जिससों, उस बिन रहा न जा रे ॥
घायल बिना दरद की, क्या जाने सार कोई ।
लागी प्रेम चोट जिसके, पीर जाने यार सोई ॥
जल ठौर जोंक होवै, मीन जीवै क्यों बिचारे ।
दया कीजै, दरस दीजै, हित चंद नंद दुलारे ॥

श्रीयुगलरसमय-संकीर्तन

जय राधे जय राधे राधे जय राधे जय श्री राधे ।
जय कृष्ण जय कृष्ण कृष्ण जय कृष्ण जय श्री कृष्ण ॥
श्यामा गोरी नित्य किशोरी प्रीतम जोरी श्री राधे ।
रसिक रसीलो छैल छवीलो गुणगरवीलो श्रीकृष्ण ॥
रासविहारिणि रसविस्तारिणि पिय उरधारिणि श्रीराधे ।
नव नव रङ्गी नवलत्रिभङ्गी श्यामसुअङ्गी श्रीकृष्ण ॥
प्राणपियारी रूपउजारी अति सुकुमारी श्रीराधे ।
मैनमनोहर महामोदकर सुन्दर वरतर श्रीकृष्ण ॥
शोभाश्रेणी मोहामैनी कोकिलवैनी श्रीराधे ।
कीरतिवन्ता कामिनिकन्ता श्रीभगवन्ता श्रीकृष्ण ॥
चन्दावदनी कुन्दारदनी शोभासदनी श्रीराधे ।
परम-उदारा प्रभा-अपारा अतिसुकुमारा श्रीकृष्ण ॥
हंसागमनी राजतरमनी क्रीडाकमनी श्रीराधे ।
रूपरसाला नैनविशाला परम कृपाला श्रीकृष्ण ॥
कञ्चन वेलि रति रस रेलि अति अलवेलि श्रीराधे ।
सब सुखसागर सब गुणआगर रूपउजागर श्रीकृष्ण ॥
रमणीरम्या तरुतरतम्या गुण-अगम्या श्रीराधे ।
धामनिवासी प्रभाप्रकासी सहज सुहासी श्रीकृष्ण ॥
शक्त्याह्लादिनि अतिप्रियवादिनि उरउन्मादिनि श्रीराधे ।
अङ्ग अङ्ग टोना सरस सलोना सुभग सुठोना श्रीकृष्ण ॥
राधा नामिनि गुण अभिरामिनि श्रीहरिप्रिया स्वामिनि श्रीराधे ।
हरे हरे हरि हरे हरे हरि हरे हरे हरि श्रीकृष्ण ॥

॥ श्रीराधाकृपाकटाक्षम् ॥

मुनीन्द्रवृन्दवन्दिते त्रिलोकशोकहारिणि
प्रसन्नवक्त्र पङ्कजे निकुञ्ज भू विलासिनि ।
व्रजेन्द्रभानुनन्दिनि व्रजेन्द्रसूनुसंगते
कदा करिष्यसीह मां कृपाकटाक्षभाजनम् ॥ १ ॥
अशोकवृक्षवल्लरी वितानमण्डपस्थिते
प्रवालबालपल्लव प्रभारुणांघ्रिकोमले ।
वराभयस्फुरत्करे प्रभूतसम्पदालये
कदा करिष्यसीह मां कृपाकटाक्षभाजनम् ॥ २ ॥
अनङ्गरङ्गमङ्गल प्रसङ्गभङ्गुरभ्रुवां
सुविभ्रमं ससम्भ्रमं दृगन्तबाणपातनैः ।
निरन्तरं वशीकृतप्रतीतनन्दनन्दने
कदा करिष्यसीह मां कृपाकटाक्षभाजनम् ॥ ३ ॥
तडित्सुवर्णचम्पक प्रदीप्तगौरविग्रहे
मुखप्रभापरास्त कोटिशारदेन्दुमण्डले ।
विचित्र चित्र सञ्चरच्चकोर शावलोचने
कदा करिष्यसीह मां कृपाकटाक्षभाजनम् ॥ ४ ॥
मदोन्मदातियौवने प्रमोदमानमण्डिते
प्रियानुरागरञ्जिते कलाविलासपण्डिते ।
अनन्यधन्य कुञ्जराजकामकेलिकोविदे
कदा करिष्यसीह मां कृपाकटाक्षभाजनम् ॥ ५ ॥

अशेषहावभाव धीरहीरहारभूषिते
प्रभूतशातकुम्भ कुम्भकुम्भि कुम्भसुस्तनि ।
प्रशस्तमन्द हास्यचूर्ण पूर्णसौख्यसागरे
कदा करिष्यसीह मां कृपाकटाक्षभाजनम् ॥६॥
मृणालबालवल्लरी तरङ्गरङ्गदोर्लते
लताग्रलास्यलोलनीललोचनावलोकने ।
ललल्लुलन्मिलन्मनोज्ञ मुग्धमोहनाश्रये
कदा करिष्यसीह मां कृपाकटाक्षभाजनम् ॥७॥
सुवर्णमालिकाञ्चिते त्रिरेखकम्बुकण्ठगे
त्रिसूत्रमङ्गलीगुण त्रिरत्नदीप्तिदीधिते ।
सलोलनीलकुन्तले प्रसूनगुच्छगुम्फिते
कदा करिष्यसीह मां कृपाकटाक्षभाजनम् ॥८॥
नितम्बबिम्बलम्बमान पुष्पमेखलागुणे
प्रशस्तरत्नकिङ्किणी कलापमध्यमञ्जुले ।
करीन्द्रशुण्डदण्डिकावरोहसौभगोरुके
कदा करिष्यसीह मां कृपाकटाक्षभाजनम् ॥९॥
अनेकमन्त्रनाद मञ्जुनूपुरारवस्खलत्
समाजराजहंसवंश निक्वणातिगौरवे ।
विलोलहेमवल्लरी विडम्बिचारुचङ्क्रमे
कदा करिष्यसीह मां कृपाकटाक्षभाजनम् ॥१०॥

अनन्तकोटिविष्णुलोक नम्रपद्मजार्चिते
हिमाद्रिजा पुलोमजा विरिञ्चजा वरप्रदे ।
अपारसिद्धिवृद्धिदिग्ध सत्पदाङ्गुलीनखे
कदा करिष्यसीह मां कृपाकटाक्षभाजनम् ॥ ११ ॥
मखेश्वरि क्रियेश्वरि स्वधेश्वरि सुरेश्वरि
त्रिवेद भारतीश्वरि प्रमाणशासनेश्वरि ।
रमेश्वरि क्षमेश्वरि प्रमोद काननेश्वरि
व्रजेश्वरि व्रजाधिपे श्रीराधिके नमोऽस्तु ते ॥ १२ ॥
इतीद् मद्भुतस्तवं निशम्य भानुनन्दिनी
करोतु सन्ततं जनं कृपाकटाक्षभाजनम् ।
भवेत्तदैव सञ्चितत्रिरूपकर्मनाशनं
लभेत्तदा व्रजेन्द्रसूनुमण्डलप्रवेशनम् ॥ १३ ॥

॥ इति श्रीमदूर्ध्वाम्नाये श्रीराधिकायाः कृपाकटाक्षस्तोत्रं सम्पूर्णम ॥

श्रीब्रह्माण्डपुराणोक्त श्रीराधा स्तोत्र

गृहे राधा वने राधा पृष्ठे राधा पुरःस्थिता ।
यत्र यत्र स्थिता राधा राधैवाराध्यते मया ॥
जिह्वा राधा श्रुतौ राधा नेत्रे राधा हृदिस्थिताः ।
सर्वाङ्गेव्यापिनी राधा राधैवाराध्यते मया ॥
पूजा राधा जपे राधा राधिका चाभिवन्दने ।
स्तुतौ राधा शिरोराधा राधैवाराध्यते मया ॥
गाने राधा गुणे राधा राधिका भोजने गतौ ।
रात्रौ राधा दिवा राधा राधैवाराध्यते मया ॥
माधुर्ये मुधुराराधा महत्त्वे राधिका गुरुः ।
सौन्दर्ये सुन्दरी राधा राधैवाराध्यते मया ॥
राधा पद्मानना पद्मा पद्मोद्भवसमुद्भवा ।
पाद्मे विवेचिता राधा राधैवाराध्यते मया ॥
राधाकृष्णात्मिका नित्यं कृष्णोराधात्मकोध्रुवम् ।
वृन्दावनेश्वरी राधा राधैवाराध्यते मया ॥
जिह्वाग्रे राधिका नाम नेत्राग्रे राधिका तनुः ।
कृष्णहार्द्दपरा राधा राधैवाराध्यते मया ॥
कर्णाग्रे राधिकाकीर्ति मनोऽग्रे राधिका तनुः ।
कृष्णप्रेममयी राधा राधैवाराध्यते मया ॥

श्री राधा

श्रीमधुराष्टकम्

अधरं मधुरं वदनं मधुरं नयनं मधुरं हसितं मधुरम् ।
हृदयं मधुरं गमनं मधुरं मधुराधिपतेरखिलं मधुरम् ॥ १ ॥
वचनं मधुरं चरितं मधुरं वसनं मधुरं वलितं मधुरम् ।
चलितं मधुरं भ्रमितं मधुरं मधुराधिपतेरखिलं मधुरम् ॥ २ ॥
वेणुर्मधुरो रेणुर्मधुरः पाणिर्मधुरः पादौ मधुरौ ।
नृत्यं मधुरं सख्यं मधुरं मधुराधिपतेरखिलं मधुरम् ॥ ३ ॥
गीतं मधुरं पीतं मधुरं भुक्तं मधुरं सुप्तं मधुरम् ।
रूपं मधुरं तिलकं मधुरं मधुराधिपतेरखिलं मधुरम् ॥ ४ ॥
करणं मधुरं तरणं मधुरं हरणं मधुरं स्मरणं मधुरम् ।
वमितं मधुरं शमितं मधुरं मधुराधिपतेरखिलं मधुरम् ॥ ५ ॥
गुञ्जा मधुरा माला मधुरा यमुना मधुरा वीची मधुरा ।
सलिलं मधुरं कमलं मधुरं मधुराधिपतेरखिलं मधुरम् ॥ ६ ॥
गोपी मधुरा लीला मधुरा युक्तं मधुरं भुक्तं मधुरम् ।
दृष्टं मधुरं शिष्टं मधुरं मधुराधिपतेरखिलं मधुरम् ॥ ७ ॥
गोपा मधुरा गावो मधुरा यष्टिर्मधुरा सृष्टिर्मधुरा ।
दलितं मधुरं फलितं मधुरं मधुराधिपतेरखिलं मधुरम् ॥ ८ ॥

(श्रीवल्लभाचार्यजीमहाराज द्वारा विरचित)

राधे किशोरी दया करो ।

हम से दीन न कोई जग में, बान दया की तनक ढरो ।
सदा ढरी दीनन पै श्यामा, यह विश्वास जो मनहि खरो ।
विषम विषय विष ज्वाल माल में, विविध ताप तापनि जु जरो ।
दीनन हित अवतरी जगत में, दीनपालिनी हिय विचरो ।
दास तुम्हारो आस और (विषय) की, हरो विमुख गति को झगरो ।
कबहुँ तो करुणा करोगी श्यामा, यही आस ते द्वार पर्‌यो ।